Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

# जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 05 30 मई, 2019 मूल्य 5 रुपये

## प्रधान की कलम से

## सुरक्षा कर्मियों का सम्मान राष्ट्र की शान

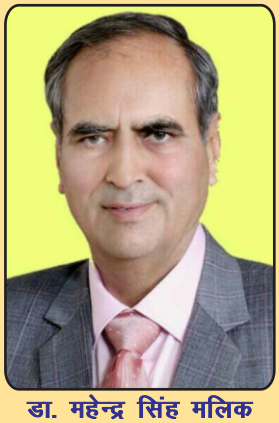

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आचार्या चाणक्य ने कहा था कि देश की सरहदों की रक्षा करनी हो तो सुरक्षा कर्मियों के परिजनों की भलाई सोचें लेकिन यहां स्थिति उलट है। राष्ट्र के प्रहरी भारतमाता के सच्चे सपूत और दुश्मन के लिए कहर बन बरसने वाले अपने ही देश में असुरक्षित हैं। यहां आतंकवादियों, पत्थबाजों के लिए मानवाधिकार एकजुट हो जाते हैं। राजनेता उन्ही से सुरक्षा की गुहार लगाते हैं। उन्ही पर छींटाकशी करते हैं। क्या सुरक्षा कर्मी का मानवाधिकार नहीं है? ऐसी राजनैतिक हस्तियों पर देशद्रोह की कार्यवाही क्यों ना हो लेकिन उल्टे उन्हे सुरक्षा दी जाती है। एक आर टी आई की खबर के अनुसार मात्र जम्मु कश्मीर में अलगाववादियों की सुरक्षा पर वार्षिक 10 करोड़ से भी अधिक सरकारी खर्चा हो रहा है। ऐसा भी नहीं है कि वे ऐसे खर्च वहन ना कर सकते हों। उनके पास अरबों की अकूत संपदा है। मंहगी गाड़ियों में घूमते हैं, हर ऐशो-आराम के साधन हैं। यहां तक कि इन सबके बच्चे देश-विदेशों में मंहगी से मंहगी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आज देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था बुरी तरह से चरमरा गई है और बाहरी सुरक्षा पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इस अवस्था के लिए मुख्य रूप से राष्ट्र में अंदरूनी बढ़ती हुई सांप्रदायिक व जातीय हिंसा, जेहादी उग्रवाद, उतर पूर्वी राज्यों में बढ़ती हुई अलगाववाद की भावना, माओवाद, राष्ट्रीय भावना का अभाव, न्यायिक अव्यवस्था, बढ़ती हुई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, नेताओं की दलगत वोट की राजनीति व लाल सलाम उतरदायी है। इससे भी बढ़कर देश की बाहरी सीमाओं में पड़ौसी राज्यों -पाकिस्तान, बंगलादेश, चीन, नेपाल, श्रीलंका आदि से हो रही लगातार अनगिनत असामाजिक व जेहादी तत्वों की अवैध घुसपैठ, बेहतर संबंधों के नाम पर चीन द्वारा किया जा रहा भीतरघात, भारतीय समुद्री मार्ग तट व इसके आस पास के इलाकों से हो रही अवैध घुसपैठ व तस्करी से भी राष्ट्र की बाहरी सुरक्षा के साथ-साथ अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगड़ती जा रही है। हमारे राजनेता रोहिंग्या मुस्लिमों को तो प्रश्रय दे रहे हैं जो उनके देश में भी अस्थिरता कायम करने के प्रयास की वजह से निवस्त्र हुए हैं लेकिन हमारे देश में वे क्या करेगें इससे उन्हे कोई सरोकार नहीं है। करीब 36 वर्ष पूर्व बंगाल के एक गांव से शुरू हुआ नक्सलवाद का तांडव आज राष्ट्र के 20 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में फैल चुका है। अब बात केवल बंगाल तक ही सीमित नहीं रही, आंध्रप्रदेश, ओडिसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उतराखंड, छतीसगढ़, बिहार, तामिलनाडू, उतरप्रदेश जैसे राज्यों में भी 150 से अधिक जिलों में अपने पांव जमा चुकी है। इसमें कभी कोई दो राय नहीं है कि किसी समस्या का निदान कभी बंदूक की नाल से नहीं निकलता। निदान के लिए जरूरी है कि समस्या की जड़ तक जाया जाए, भटके नवयुवा को राहे रास्ते लाने के लिए उसे रोजगार के अवसर, न्याय, विकास की सीढ़ी उपलब्ध करवाकर मानवता का रास्ता दिखाया जाए

शेष पेज-2 पर

## Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition on 04-7-2019

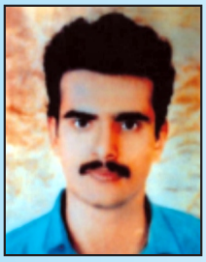

Jat Sabha, Chandigarh has been organising 'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition' for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexander the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 04-7-2019.

विस्तृत पृष्ठ 10 पर 1

शेष पेज–1

लेकिन हमारे राजनैतिक दल स्वार्थवश ऐसा नहीं होने देते। स्वच्छंद नव युवाओं, जिनका विवेक पहले ही मर चुका है, उन्हे जाति पाति, धर्म, क्षेत्रीयता के नाम पर गुमराह कर उन्हे अपने मतलब के लिए बहकाया,फुसलाया जाता है।

वास्तव में स्वार्थी नेताओं व मौकापरस्त शासक दलों की वोट की राजनीति आंतरिक सुरक्षा कायम रखने में एक बाधा बनी हुई है। राजनैतिक हस्तक्षेप सुरक्षा बलों को अक्षम बना रहा है जिस कारण शासक दलों के राजनीतिज्ञों द्वारा अपने नीहित स्वार्थों के लिए सेना तथा सुरक्षा बलों पर विपरीत आरोप लगाए जा रहे हैं। वर्ष 1994 तक अकेले जम्मु कश्मीर में सुरक्षा बलों के खिलाफ विभिन्न आरोपों की 977 शिकायतें दर्ज करवाई गई जिसमें से 965 शिकायतों की जांच के बाद 940 आरोप गलत साबित हुए यानि कि 95 प्रतिशत शिकायतें झूठी पाई गई। नेताओं द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इस प्रकार की सुरक्षा बलों की कार्यवाही पर की जाने वाली उटपटांग बयानबाजी, बेवजह फैलाए जा रहे जातिवाद व धार्मिक कट्टरवादी टिप्पणियां भी राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर रही हैं। सता हासिल करने के लिए विभिन्न राजनैतिक दल नकसलवादियों के साथ खुला व भूमिगत समझौता करते हैं और समय आने पर अशिक्षित व बेरोजगार आदिवासी युवकों को बहका कर आतंकी गतिविधियों में धकेल देते हैं।

राष्ट्र में निरंतर बढ़ रही बेरोजगारी युवा वर्ग में भविष्य के प्रति असुरक्षा व निराशा की भावना उत्पन्न कर रही है जिस कारण राष्ट्र की युवा शक्ति विकास की अपेक्षा अवन्नति की ओर अग्रसर है जिसका राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ राष्ट्र के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। राष्ट्र के ग्रामीण समाज विशेषकर नक्सलवाद से प्रभावित बिहार, महाराष्ट्र, छतीसगढ़ आदि राज्यों में बढ़ती हुई बेरोजगारी के साथ-साथ आर्थिक विकास का अभाव व भुखमरी भी माओवाद का मुख्य कारण है।

वर्ष 2016 में 322 सैनिक और 82 सुरक्षा कर्मी शहीद हुए, 2017 में 342, वर्ष 2018 में 705 तथा 2019 में 347 तथा पुलवामा हमले में 40 सैनिक और सुरक्षा कर्मी वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। ऐसा भी नहीं है कि उन्होने वर्दी की लाज ना रखी हो। वतन पर न्यौछावर होने से पूर्व वे अपना राष्ट्र प्रेम का ऋण चुकता कर गए और कृतज्ञ राष्ट्र को अपने आभार से ऋणी कर गए। सरकार ने अब सुरक्षा बलों और सैनिकों को कार्यवाही की खुली छूट भी दे दी है ताकि अधिकारी मौके पर ही उचित कार्यवाही को अंजाम दे सकें। हर बार स्वीकृति के लिए दिल्ली की ओर ना झांके। सरकार ने पाकिस्तान को कई बार ऐसी गतिविधियों से हाथ खींचने पर समझाया है, हर बार सौहार्द का हाथ बढ़ाया है लेकिन बिच्छू अपनी आदत से कभी सुधर नहीं सकता ।

मुस्लिम समुदाय के मौलाना मसूद अजहर ने हरकत उल्ला मुजाहदीन दहशतगर्द संगठन से वित्तीय पोषण लेकर सोमालिया का दौरा किया और यमन में भर्ती अभियान चलाया तथा 2000 में तालिबान की मदद से जैश-ए-मोहम्मद संगठन खड़ा किया जिसकी पुष्टि संयुक्त राष्ट्र ने प्रतिबंध से की। वर्ष 2001 में पाकिस्तान की मदद से भारतीय संसद भवन पर हमला किया लेकिन 2002 में साक्ष्यों के अभाव में छोड़ दिया गया। पाकिस्तान ने इस संगठन को गैर कानूनी बता प्रतिबंधित कर दिया क्योंकि इसने तब राष्ट्रपति परवेज मुर्शरफ पर दो बार हमला किया। इस संगठन का प्रधान 2013 में कुपवाड़ा में मारा गया जिसके बाद आदिल पठान सरगना बना लेकिन वह अब्दुल हमीद दूसरे दहशतगर्द के साथ 2015 में मारा गया लेकिन संगठन तब तक स्थानीय जड़ें जमा चुका था। इसके बाद अलताफ सरगना बना लेकिन जल्द ही सुलटा दिया गया। इसी अवधि में पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय पुलिस के दबाव में अजहर को सीधे बयान देने से मना किया लेकिन कुत्ते की पूंछ कहां सीधी होती है। उसने अपनी गतिविधियां दिल्ली में चंदा उगाही से जारी रखी। अगस्त 2017 में पुलवामा में जब सुरक्षा कर्मी मारे गए। सुरक्षा बलों ने राजनैतिक पार्टियों के आकाओं की आंकाक्षाओं के अनुरूप जब्त बनाए रखा और दहशतगर्दी पर लगाम अमनी शहादतों से कसी जो आधी-अधूरी कार्यवाही ही रही क्योंकि राजनैतिक माहौल अनुरूप ना था। हाल ही में पुनः पुलवामा में एक स्थानीय युवक ने मानव बम्ब बनकर आरडीएक्स से भरी जीप सी आर पी एफ के काफिले में घुसा दी गत दो वर्षों में अपने साथियों की शहदतों के बावजूद काफी हद तक नकेल डाली है।

पुलिस रिकार्ड के अनुसार वैली में 56 दहशतगर्द हैं जिनमें 33 पाकिस्तानी तथा 23 स्थानीय हैं। उत्तरी कश्मीर में तीन, दक्षिण कश्मीर में 35 जैश संगठन हैं और इनमें से 21 स्थानीय हैं लेकिन श्रीनगर, बड़गांव, गंदरवाल जिलों में कोई नहीं है। इनके पुनः संगठित होने के पीछे पाकिस्तान की गंदी चाल है जो सीधे युद्ध के काबिल नहीं है अपितु छदम युद्ध में भारत को नुकसान पहुंचाना चाहता है। आज भी इमरान खान शांति के संदेश बगल में छुरी रखकर दे रहा है। बार-बार उनके दहशतगर्दी में मुदाखलत के सबूत मांग रहा है। वह भूल जाता है कि 26/11 के कसाब हमले का हर सबूत सर्वविदित होने के बावजूद भारत द्वारा हर पहलू का विवरण देने के बावजूद बेशर्मी से मुकर रहा है। दहशतगर्दों को पनाह भी दिए हुए है और फौज उन्हे ट्रैनिंग दे रही है। यहीं नही भारत में घुसाने हेतू कवरिंग फायर करती है और फिर भी पूछता है कि मुद्दा क्या है।

हम भारत की उन वीरांगनाओं को भी नमन करते हैं जो शहीद सुरक्षाकर्मी की जवानी में ही बेवा हो गई। छोटे-छोटे बच्चे बाप के साए से महरूम हो गए। अभी हाल के पुलवामा हमले के शहीदों के परिवारों की दास्तां भी देख लें। तीन साल का बोध बालक, दस वर्ष की बोध बालिका अपने बाप के पार्थिव शरीर को मुखाज्नि दी है। आज ताजा घटना है और राष्ट्र एकजुट है लेकिन उस बेवा की पहाड़ सी जिंदगी का क्या होगा, उसका कौन सहारा बनेगा? उन मासूम बोध बच्चों के सिर से बाप का साया छिन्न गया, उन्हे कौन दुलार-प्यार और परवरिश देगा? इसके लिए भारतीय संसद को कानूनन कोई स्थाई समाधान ढूंढना होगा।



अमृत और मृत्यु दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है। –वेद व्यास

बच्चों की परवरिश, पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था करना सरकार का जिम्मा हो। शहीद के आश्रितों को उसकी रहती सेवाकाल तक पूरा वेतन मिले तथा बेवा बच्चों को स्थाई आवास-निवास मिले ताकि उनकी अभाव की जिंदगी किसी की मोहताज ना हो।

सभी राजनेताओं को एकजुट होकर कश्मीर में धारा 370 हटाने के प्रयास करने चाहिए ताकि वहां उद्योग धंधे स्थापित हो सकें और उन्हे रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें। मदरसों के आधुनिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो तथा मुल्ला मौलवियों को टिचिंग शिक्षा अनवार्य हो ताकि वे अपनी जहाल्लत और नासमझी से बच्चों को गुमराह ना कर सकें। अफगानिस्तान में तालिबानों ने अपने ही इतिहास और विरासत को ध्वस्त कर दिया। अब उन्हे तो नहीं लेकिन वहां के प्रबन्धकवर्ग ने जाना कि वे ऐसा नुकसान कर चुके हैं जिसकी भरपाई कभी नहीं हो पाएगी। अब भारत ने पाकिस्तान से मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा वापिस ले लिया है। वहां से आयातित सामान पर 200 प्रतिशत कर लगा दिया है। जैश-ए-मोहम्मद आतंकी संगठन को आतंकी सगठन घोषित कर दिया है, जिसकी ताईद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई है। इस मुहिम में आतंकियों से लड़ने हेतू विश्व आज एकजुट हो गया है और संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इस पर मुहर लगा दी है जो भारत की बहुत बड़ी विजय का प्रतीक है। स्मरण रहे कि हर बार पाकिस्तान का साथ देने वाले चीन ने भी इस कार्यवाही पर हस्ताक्षर किए हैं ताकि दहशतगर्दी जैसे घिनौने कृत: पर लगाम कसी जा सके और आस्तीन के सांपों से निपटा जा सके।

सुरक्षा बलों की कारगुजारी पर बिना बात अंहकाराना छींटाकशी करने वाले राजनेताओं को भी सबक सिखाने की जरूरत है, जिसके लिए जनता को जागरूक होना अनिवार्य है। सर्वविदित है कि जिस घर में बुजुर्गों और नारी का सम्मान नहीं होता वह घर कभी प्रगति नहीं करता तथा जिन देशों में राष्ट्रीय धरोहर के ध्वज वाहक शहीदों का सम्मान नहीं होता वे राष्ट्र कभी सुरक्षित नहीं रहते और ना ही वे राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। सुरक्षा सैनिकों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भता की अनुभूति हेतू उनके शहीदों का सम्मान, शहीद आश्रितों की भलाई ही राष्ट्र की नई बुलंदियों पर ले जाएगी। यही भारत का स्वर्णिम इतिहास और धरोहर है जिसे संभालना सजोना ही हमारी भावी पीढ़ियों के लिए गर्व की बात होगी और यही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उपरोक्त के इलावा केन्द्रीय सरकार द्वारा तुरन्त चहुंमुखी प्रतिभा वाले अति विशिष्ट व्यक्तियों का राष्ट्रीय शान्ति आयोग गठित करने की आवश्यकता है और इस आयोग के महत्वपूर्ण सुझावों एवं सलाह अनुसार समस्त राष्ट्र में सद्भावना का वातावरण बनाना देश की प्रभुसता एवं अखण्डता बनाये रखने के लिये अति आवश्यक है।

**डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक**
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

# भारत की आंतरिक सुरक्षा, किसानों और महिलाओं की समस्याओं पर गहन चिंतन और मंथन की जरूरत

-डॉ महेंद्र सिंह मलिक

भारत अभी चुनावों के दौर से गुजरा है। बहुत सारे राज्यों में लोकतंत्र के इस उत्सव के कई सारे रूप देखने को मिले हैं। हिंसा का भी एक रूप देखने को मिला है और वोट बैंक की राजनीति और येन केन किसी भी तरह से सत्ता की दहलीज तक पहुंचने की कोशिश में जातिवाद और धार्मिक कट्रता में झुलसता भारत भी हम सबके सामने है। चुनाव संपन्न कराने में जहां नक्सलवाद एक गंभीर चुनौती बना है वहीं पर लोगों ने वोट बैंक की राजनीति में आपसी भाईचारे और प्रेम को तिलांजलि दे दी। जुबान से जाति और धर्म का जहर उगलते कई नेताओं पर तो चुनाव आयोग ने बोलने तक भी रोक लगानी पडी। इन सबके पीछे लंबे समय से सोशल मीडिया पर की जा रही नफरत की खेती भी कम जिम्मेदार नहीं हैं, जिसके बारे में अभी तक कोई खास कदम नहीं उठाए गए हैं। ये सच्चाई है कि वो देश या समाज कभी भी स्थाई तरक्की या खुशियों को हासिल नहीं कर सकता है जिसका समाज इस तरह विखंडित हो या जिसका नेतृत्व इस कदर बिखरा हो। भारत की जो तस्वीर मीडिया में प्रस्तुत की जाती है या जैसी तस्वीर सत्ता पक्ष के शासक प्रस्तुत करते हैं, क्या वास्तव में भारत वैसा ही है? क्या उसकी स्थिति पर गंभीर चिंतन की जरूरत नहीं है? आज हम भारत की आतंरिक सुरक्षा और स्थिति पर चिंता करेंगे कि आज हमारे सामने क्या समस्याएं मुंह बाए खडी हैं।

कितनी विडंबना है कि आजादी मिलने के बाद से अभी तक जितने भी चुनाव हुए हैं, पार्टियों ने जहां टिकट जातिगत समीकरणों को देखकर दिए हैं वहीं मतदाताओं ने भी योग्यता को दरकिनार कर नेता भी जाति देखकर ही चुने हैं। जातिगत व्यवस्था भारत की एक कडवी सच्चाई है लेकिन जातिगत कट्टरता हमारे समाज की बहुत बडी दुश्मन है इसको समझना होगा। इसने समाज को कई हिस्सों में बांट दिया है। यह शुद्ध रुप से शोषण के वर्गीकरण की व्यवस्था है, जिसमें मेहनत करने वालों को एक अलग पहचान कराने का काम किया गया है। अब बडा सवाल ये है कि क्या जाति व्यवस्था खत्म नहीं की जा सकती है? वैसे ज्यादा पढ़े लिखे



मनुष्य की बुराइयां दीर्गजीवी और अच्छाइयां अल्पायु होती हैं। –शेक्सपीयर

लोग और फिल्म उद्योग इस जाति के चक्कर से बाहर निकलते दिख रहे है यह अच्छा संकेत हैं लेकिन जातिवाद के नाम पर राजनीति करना बड़ा आसान हो गया है, ऐसे लोग इस व्यवस्था का फायदा लेने में लगे है। देश को दुनियां में बड़े देशों के बराबर पर लाना है तो इस जातिवाद जैसी बिमारी को जड़ से मिटाना होगा । हर प्रदेश अंतर जातीय विवाहों को कागजों में इनाम देने की बात करता है मगर सामाजिक रुप से इसको बदलने की पहल नहीं की जाती है। अगर ये जाति व्यवस्था समाप्त हो जाए तो पूरा समाज विकास करेगा। जाति के नाम पर राजनीति करने वाले विकास की बातें करने लगेंगे तभी देश में बेहतर विकास की प्रक्रिया शुरू होगी। हर धर्म में जातियां हैं, जातियों में ऊंच नीच की व्यवस्था है । यह शुद्ध रुप से शोषण करने के लिए बनाया गया जाल है । जिसको ये पूंजीवादी सत्ता कायम रखना चाहती है।

ये जाति व्यवस्था मेहनत करने वालों को जाति के आधार पर काम का बटवारा करके सदियों तक, पीढ़ी दर पीढ़ी शोषण करने का आधार बनाती है । अलग अलग धर्मो के अन्दर भी जाति आधारित भेदभाव की व्यवस्था है । जिसमें कुछ जातियो को आज भी उनके धार्मिक स्थानों पर जाने की अनुमति नहीं है । इस व्यवस्था को बदलने में नौजवानों, युवाओ को विशेष पहल करने की जरुरत है । क्योंकि बदलाव पीढ़ीयो में होते है । बुजुर्ग बदल जाएंगे ऐसा सोचना गलत होगा । थोड़ी देर कल्पना करो कि ये जाति व्यवस्था कल से खत्म हो गई अब सोचो कितने झगड़े, विवाद और राजनीति में कितने बदलाव आ जाएंगे। अब देश के विकास की ही बातें होगी । अपने लाभ के लिएराजनीतिक पार्टियां धर्म और जाति का इस्तेमाल करना छोड दें तो ये भी एक बहुत बडा उपकार होगा।

कुछ महीने पहले छत्तीसगढ़ के नक्सलवाद से प्रभावित सुकमा जिले में नक्सलियों ने बारुदी सुरंग में धमाका कर एक एंटी लैंडमाइन वाहन उड़ा दिया। इस हमले में सीआरपीएफ के 9 जवान शहीद हो गए. 2 जवान जख्मी हैं। पिछले कई सालों से ये हमले लगातार देश के सुरक्षाबलों पर हो रहे हैं। किसी भी राष्ट्र के जन्म के साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रक्रिया का जन्म होता है जो कि राष्ट्र के जीवन में प्रत्येक पहलू से संबंधित होती है। राष्ट्रीय सुरक्षा से तात्पर्य राष्ट्र की एकता अखंडता संप्रभुता एवं नागरिकों के जीवन एवं उनकी संपत्ति की रक्षा करने से है जिसको सशस्त्र सेनाओं के द्वारा पूरा किया जाता है । किन्तु किसी भी राष्ट्र को तभी सुरक्षित कहा जा सकता है जब वह आंतरिक खतरों से भी पूर्णत: अवमुक्त हो। यह उस स्तर के राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया है जहाँ राष्ट्र राष्ट्रीय आकांक्षा के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं से निपटने में सक्षम हो जाता है । किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार से हो सकता है । लेकिन जब राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा बाहर से होता है तो यह पूर्ण रूप से राष्ट्रीय रक्षा के क्षेत्र में आता है जबकि आंतरिक खतरा, राष्ट्रीय रक्षा एवं सुरक्षा दोनों क्षेत्रों से संबंधित होता है । भारत के सामने ये दोनों चुनौतियां हैं।

भारत एक विशाल संघीय राष्ट्र है परन्तु राष्ट्र की विशालता एवं प्रांतों के विकास का स्तर अलग-अलग होने से मूल्यों में विभिन्नता स्वाभाविक है। ऐसे में जब राज्य एवं केंद्र की विचारधाराएं विरोधी होती हैं तो जिस क्षेत्र के लोगों को भेदभाव का एहसास होता है, वहाँ के लोगों में असंतोष की भावना का जन्म होना अनिवार्य है। इस असंतोष को बढावा देने में हमारी राजनैतिक व्यवस्था एवं चुनाव प्रक्रिया मुख्य रूप से उत्तरदायी है। असंतोष का प्रमुख कारण सिद्धातविहीन राजनीति भी है क्योंकि राजनीतिज्ञ चुनाव जीतने के लिये एवं सत्ता प्राप्त करने के लिए अदूरदर्शिता पूर्ण नीति अपनाते हैं।

देश की आंतरिक सुरक्षा को आज जिस एक आंदोलन से सबसे बडी चुनौती मिल रही है, वह है- नक्सलवाद। नक्सलवाद का जन्म साठ के दशक में पश्चिम बंगाल के नक्सलवाड़ी आंदोलन से हुआ। नक्सलवाड़ी गांव में सामंतों के शोषण के खिलाफ कुछ किसानों ने सशस्त्र विद्रोह कर सामंतों को सजा दी, जिसके बाद से इसे नक्सलवाद के नाम से जाना गया। आज देश के आठ राज्यों में ये एक गंभीर चुनौती बनकर खडा है और इनकी भेंट में रोज शहादतें हो रही हैं। भारत में मुख्य रूप से असम, नागालैंड, मिजोरम, पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर राज्य मुख्य रूप से क्षेत्रीय आंदोलनों में प्रभावित रहे हैं । स्वाधीनता के पश्चात साल 1950 के प्रारम्भिक दशक में कुछ सीमित क्षेत्रों में ही क्षेत्रीय अलगाववाद की प्रवृत्ति देखी गई लेकिन 1960 के बाद व्यापक रूप से क्षेत्रीयता की भावनायें बलवती होने लगी । सर्वप्रथम पूर्वोत्तर भारत में नगा विद्रोहियों ने अलग राज्य की स्थापना हेतु विद्रोह किया उसके पश्चात मद्रास में विशाल आन्ध्रा आंदोलन तथा द्रविड मुनेत्र कषगम का पृथक्वादी द्रविड आंदोलन हुआ तथा अकाली दल ने इस तरह का विद्रोह किया कि स्वहित के स्थान पर राष्ट्रहित को ताक पर रख दिया गया और हमारी राष्ट्रीय अखंडता खतरे में पड़ गई।

धीरे-धीरे इन आंदोलनों की सीख अन्य राज्यों में फैलती गयी और ये आंदोलन हिंसक रूप लेने लगे । हरियाणा और पंजाब के बटवारे के साथ ही पूरा असम छोटे-छोटे अनेक राज्यों में विभक्त हो उठा, तत्पश्चात उत्तर प्रदेश से उत्तराखंड, बिहार से झारखंड और मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग राज्य दिये जाने की माँग भी जोर पकडती रही जिसके लिये व्यापक जनांदौलन चलाया गया। इसके लिए जगह-जगह तोड-फोड़ एवं बंद का रास्ता अपनाया गया । यही नहीं सरकारी संपत्ति को भी नुकसान पहुंचाया गया तथा आंदोलनकारियों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी । ज्ञातव्य है कि आंदोलन को क्षेत्रीय दल बराबर समर्थन देते रहे ।

लंबे संघर्ष के बाद उत्तरांचल, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य अस्तित्व में आए। उग्र क्षेत्रवाद के कारण विभिन्न क्षेत्रों के मध्य तनाव व टकराव पैदा होता है। यह भावना राष्ट्रीय एकता



विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

के विकास में एक प्रबल विरोधी तत्व ही नहीं। अपितु देश में व्यापक अराजकता के लिए उत्तरदायी है । बंगाल बंगालवासियों के लिए, महाराष्ट्र महाराष्ट्रवासियों के लिए, गुजरात गुजरातवासियों के लिए, उत्तराखण्ड उत्तराखण्डवासियों के लिए झारखंड झारखंडवासियों के लिए जैसे नारे, देश के अमन चैन के लिए खुली चुनौती हैं । दूसरी तरफ असम में बंगला शरणार्थियों की हो रही घुसपैठ ने यहाँ के जन-मानस को चिंतित कर रखा है कि कही वे अपने प्रदेश में अल्पसंख्यक बन के न रह जाए। असमवासियों द्वारा इन विदेशियों की पहचान कर इन्हें असम से बाहर निकालने की माँग जोर पकडती जा रही है ।

दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर समस्या सदाबहार बनी हुई है क्योंकि पाक समर्थित पृथक्तावादी तत्वों ने आतंकवाद का सहारा लेकर इस राज्य को भारत से पृथक करने के लिए सुनियोजित अप्रत्यक्ष युद्ध छेड़ रखा है जो भारतीय सुरक्षा के लिए कड़ी चुनौती है। अभी तीन महीने पहले ही पुलवामा में भीषण विस्फोट में हमारे चालीस से ज्यादा जवान शहीद हो गए हैं। ये सिलसिला लगातार जारी है।

इसके अलावा भाषा भी भारत में एक बडी समस्या हैं। भारत में हिन्दी, मराठी, गुजराती, उडिया, असमी, राजस्थानी, बंगाली, पंजाबी, नेपाली, मणिपुरी, तेलुगू, कोंकणी, कन्नड़ मलयालम आदि 22 भाषायें भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल की गई हैं, जिसमें हिन्दी भाषा सर्वत्र बोली और समझी जाती है । लेकिन केंद्र सरकार द्वारा जब सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने का आदेश जारी किया गया तो दक्षिण भारत में इसका कड़ा विरोध हुआ । ज्ञातव्य है कि तमिलनाडु में तो भाषायी प्रश्न को लेकर भारत से अलग होने की माँग भी की गई थी। तोड़-फोड़ व आगजनी के साथ ही कुछ हिन्दी प्रेमियों को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया गया । इस समस्या को लेकर भारत दो भागों में विभाजित हो गया-उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत । यद्यपि भारत की राष्ट्रभाषा समिति ने तीन सूत्री फॉर्मूले को अपनाने का सुझाव दिया जिससे क्षेत्रीय भाषाओं की सुरक्षा हो सके ।

देश की आंतरिक सुरक्षा को साप्रदायिकता का घुन भी अक्सर खोखला करता रहता है । साप्रदायिकता की परिणति भारत और पाकिस्तान के निर्माण के समय से ही हुई और दोनों राष्ट्र आज तक एक-दूसरे के विरोधी बने हुए है। सांप्रदायिकता का अर्थ ऐसी विचारधारा से है, जिसके अंतर्गत किसी संप्रदाय विशेष के लोग न्यूनाधिक रूप से धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, समान ढांचे में विश्वास रखते हों । भारत में विभिन्न धर्मावलंबी रहते है और अपने-अपने हितों के लिए विभिन्न संप्रदायों से संबद्ध हो गये हैं और इनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दशा भी भिन्न है । आज संप्रदायवाद की भावना दो विभिन्न समुदायों के मध्य कटुता एवं पारस्परिक विरोध उत्पन्न करने के साथ-साथ दूसरे धर्मो का शोषण करती है, जिसका उद्देश्य धार्मिक न होकर राजनैतिक होता है । सांप्रदायिकता महामारी की भांति फैल रही है । शायद ही कोई ऐसा राज्य है जहाँ सांप्रदायिकता का तांडव लोगों का संहार न कर रहा हो ।

भारत में निर्धनता एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसका का मुख्य कारण बेरोजगारी, जनसंख्या और देश की आर्थिक स्थिति का ठीक न होना है । भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकतायें हैं- रोटी, कपडा और मकान । लेकिन बहुत से ऐसे परिवार हैं जिनकी ये तीनों आवश्यकतायें पूरी नहीं हैं । वैसे सरकार बेरोजगारी, अशिक्षा और गरीबी हटाने के लिए डंका पीटती रहती है, लेकिन धरातल पर इसकी तस्वीर नगण्य है । आज भारत का युवा अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और अपनी रोजी-रोटी के लिए दर-दर भटक रहा है ।

निर्धनता के साथ ही बेरोजगारी भी एक बड़ी समस्या है जो व्यक्तिगत समस्या से उठकर कई प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करती है। खास बात ये है कि भारत के आम चुनाव में ये कोई मुद्दा नहीं बनती हैं। आज शिक्षित बेरोजगार युवा कुंठाग्रस्त होता जा रहा है और अधिक शिक्षित बेरोजगार युवा भी आतंकवाद की दुनिया में कदम रख रहे हैं । आज भारत शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण तथा सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी से पिछड़ता जा रहा है । भले ही अब सरकार द्वारा रोजगार गारंटी योजना कार्यक्रम के तहत काम देने की बात की गई है । इसके साथ ही शिक्षा के स्तर में भी और सुधार कर रोजगार पूरक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिये ।

अब बात करते हैं भारत के उस वर्ग की जो हाशिए पर है। पुलिस रिकार्ड को देखें तो महिलाओं के विरूद्ध भारत में एक बड़ा आकड़ा मिलता है, जो हम सबको चिंतन करने पर मजबूर करता है। यौन उत्पीड़न, दहेज प्रताड़ना, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, गर्भपात, महिला तस्करी व अन्य उत्पीड़न के आकड़े दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। वर्ष 1997 में सर्वोच्य न्यायालय ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ एक विस्तृत दिशा निर्देश जारी किया। एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में होने वाले बाल विवाहों का 40 प्रतिशत अकेले भारत में होता है। भ्रूण हत्या के मद्देनजर इस पर प्रतिबंध लगाने का सराहनीय कार्य भारत सरकार ने किया और घरेलू हिंसा पर रोकथाम के लिए 26 अक्टूबर 2006 में महिला सरक्षण एक्ट भी लाया। अभी हाल में ही 22 अगस्त 2017 में सर्वोच्य न्यायालय की पांच जजों वाली बेंच ने तीन तलाक जैसी कुरीतियों पर प्रतिबंध लगाकर मुस्लिम समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

भारत में किसानों की स्थिति भी बेहद खराब है। विचारक और किसानों के लिए काम करने वाले योगेंद्र यादव का कहना है कि भारत के किसान बहुत ही दयनीय हालत में जी रहे हैं। भारतीय किसानी आज तीन तरह के संकट का सामना कर रही है। पहला-खेती घाटे का धंधा बन गई है. दुनिया का और कोई धंधा घाटे में

नहीं चलता, पर खेती हर साल घाटे में चलती है। दूसरा- इकोलॉजिकल संकट. पानी जमींन के काफ़ी नीचे पहुंच गया है, मिट्टी उपजाऊ नहीं रही और जलवायु परिवर्तन किसानों पर सीधा दबाव डाल रहा है। तीसरा - किसानी के अस्तित्व का संकट। किसान अब किसानी करना नहीं चाहता। मैं पूरे देश के गांवों-गांवों में गया हूं और मुझे एक किसान भी ऐसा नहीं मिला कि वो कहे कि वो अपने बेटे को किसान बनाना चाहता है। किसान पलायन कर रहे हैं, आत्महत्या कर रहे हैं। पिछले 20 सालों में तकरीबन तीन लाख किसानों ने आत्महत्या की है। यह भारत में ही संभव है कि इतनी संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं और किसी को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। कोई दूसरा देश होता तो वहां की सरकार हिल जाती। कृषि राज्यमंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में राज्यसभा को बताया, 'वर्ष 2015 तक आत्महत्या के बारे में ये रिपोर्ट उसके वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। वर्ष 2016 के बाद की रिपोर्ट अभी तक प्रकाशित नहीं की गई है।' सदन में पेश किए गए आंकडों के अनुसार, वर्ष 2015 में किसानों की आत्महत्या के मामलों की संख्या 3,097 और वर्ष 2014 में 1,163 थी। वहीं अंग्रेजी दैनिक टाइम्स आफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल मई महीने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने उच्चतम न्यायालय को बताया था कि किसानों की आय और सामाजिक सुरक्षा बढ़ाने की तमाम कोशिशों के बावजूद साल 2013 से हर साल 12,000 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहे हैं। यही हाल युवाओं का है। बेरोजगारी एक बडी समस्या बनती जा रही है लेकिन सरकार के पास इससे निपटने के ठोस उपायों का अकाल नजर आता है। ऐसे में हताश युवा किस तरफ जाएंगे इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

अपराध ब्यूरो रिकॉर्ड के अनुसार बड़े-छोटे अपराधों, बलात्कार, हत्या, लूट, डकैती, राहजनी आदि तमाम तरह की वारदातों में नशे के सेवन का मामला लगभग 73.5 प्रतिशत तक है और बलात्कार जैसे जघन्य अपराध में तो ये दर 87 प्रतशित तक पहुंची हुई है। अपराध जगत के क्रिया-कलापों पर गहन नजर रखने वाले मनोविज्ञानी बताते हैं कि अपराध करने के लिए जिस उत्तेजना, मानसिक उद्वेग और दिमागी तनाव की जरूरत होती है उसकी पूर्ति ये नशा करता है जिसका सेवन मस्तष्कि के लिए एक उत्प्रेरक की तरह काम करता है। पंजाब और हरियाणा में नशा जिस तेजी से पांव पसार रहा है वो भविष्य की एक भयावह तस्वीर पेश करता है।

अत: उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि जब तक देश के अंदर पनप रही कुरीतियों को पनाह मिलती रहेगी चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो, तब तक देश की आंतरिक सुरक्षा किसी न किसी प्रकार से असुरक्षित रहेगी; क्योंकि राष्ट्र के अन्दर आपसी मनमुटाव, वैमनस्य, तनाव देश की आंतरिक सुरक्षा को बाधित करने की प्रथम कड़ी होती है । इसी के साथ ही भारत में शिक्षा, चिकित्सा पर भी ध्यान दिए जाने की जरूरत है। किसानों व महिलाओं की स्थिति पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। देश एक शरीर की तरह है। जो न केवल बाहरी सुंदर दिखना चाहिए बल्कि अंदर से भी स्वस्थ होना चाहिए।

# बागपत के किसान की बेटी अनु तोमर यूपी में बनी टॉपर

-सोमवीर आर्य

जरा से पर खोलकर तो देखो आसमान छू लेंगी बेटियां ,
बेटा बन पालो तो स्वाभिमान छू लेंगी बेटियां !

यह कहानी है , पश्चिमी उत्तरप्रदेश के एक किसान हरेंद्र तोमर की बेटी अनु तोमर की जिसने इस बार उत्तर प्रदेश की बाहरवीं की बोर्ड परिक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया है । अनु को 500 में से 489 अंक मिले हैं , जो लगभग 98 प्रतिशत हैं। बेटी ने जब रिजल्ट देखा तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा और उसका प्रिंट आउट लेकर सीधी खेतों की तरफ भागी ! जहां पर 42 डिग्री टेंपरेचर में पसीने से तर-बतर होकर उसका पिता गेहूं की फसल काट रहा था। और जब धरतीपुत्र ने जब अपनी लाड़ली बेटी का परिणाम देखा तो लगा तेज बारिश हो रही हो और बारिश की तेज बूंदों ने उस किसान की सारी थकान एक पल में हर ली हो। अब आंखें नम थी । और बेटी को सीने से लगा लिया था । क्योंकि अनु का ना कोई ट्यूशन लगाया गया था ,और ना उसके पास स्कूटी और साइकिल थी। वह हर रोज 7 किलोमीटर चलकर स्कूल पढ़ने जाती है । और घर का काम करने के अलावा खेत में भी चिलचिलाती धूप में अपने पिता का हाथ बंटाती है। अनु ना फेसबुक पर हैं , ना ट्विटर पर है , और ना उसे पबजी के बारे में पता है और ना उसको आज की फोन और फिल्मों की दुनिया का लंबा चौड़ा ज्ञान है। पर आज जब हरेंद्र तोमर गलियों में निकलता है , तो लोग कहते हैं देखो यह अनु तोमर का पिता जा रहा है।

इतनी छोटी सी उम्र में तमाम संसाधनों के अभाव में कोचिंग सेंटर के कल्चर को लात मारते हुए 45 किलो की बेहद साधारण सी दिखने वाली, खेत में तल्लीनता के साथ में धरती माता के साथ बराबर समय बिताने वाली अनु तोमर ने अपने किसान पिता का का सीना आज गर्व से चौड़ा कर दिया है ।

आज हरेंद्र सिंह तोमर को अपनी बेटी पर गर्व है और वो कहते हैं कि उनकी बेटी ने कभी पढ़ाई के नाम पर स्कूल के अलावा कोई और अतिरिक्त सुविधा की मांग नहीं की । इसके अलावा वो लगातार घर के कार्यो और खेत के कार्यो में हमारा हाथ बढ़ाती रही है । प्रिंसिपल और शिक्षक राजीव तोमर का कहना है - वह पढ़ाई



कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

को लेकर हमेशा गंभीर रही है। वह चीजों को बारीकी से समझती है । कई बार उसको समझाने के लिए मुझे भी बहुत ज्यादा पढ़ाई करनी पड़ती थी । किताबों में चीजें तलाशनी पड़ती थी। अनु वाकई में होनहार बिटिया है। इस सृष्टि का वजूद नारी से और नारी का कद सबसे बड़ा है। आज मजबूती के साथ में बेटियों के पर खोलने की जरूरत है। ताकि वो अपनी उड़ान स्वयं भर सकें ।

अनु तोमर से जब पूछा गया कि वह आगे जाकर क्या बनना चाहती है । तो तपाक से जवाब दिया - '' डाक्टर '' उसका कहना है कि जब वो डॉक्टर बनेगी तो चाहे वह अमीर हो या गरीब वह किसी को इलाज के अभाव में नहीं मरने देगी '' आप भी अपना कॉलर उठाकर धरतीपुत्र की इस मेहनती पुत्री को आशीर्वाद दीजिए ताकि यह अपने सपनों को एक बड़ी उड़ान दे सके । हो सकता है , स्टेट लेवल पर टाप करना बहुत से लोगों के लिए सामान्य सी बात हो। पर मैं भी किसान परिवार से संबंध रखता हूं । इसलिए उन परिस्थितियों का बेहतर आकलन कर सकता हूं जिन परिस्थितियों में किसान की इस गुड़िया ने यह कारनामा किया है ।यह बिल्कुल भी आसान नहीं है इसके लिए दुनियाभर की बातों को नजरंदाज करने के साथ - साथ गंभीर एकाग्रता की भी आवश्यकता है । क्योंकि पढ़ाई के समय भी आपको काम पर काम बताये जा रहे होते हैं। उन कामों को करते हुए पढ़ना बड़ी बात है ।

आपकी सफलता आपकी निष्ठा , लगन और एकाग्रता के साथ एक लक्ष्य को सामने रखकर की गई साधना की परिणति होती है। फंडा यह है - कि मेहनत पुरजोर तरीके से और सही दिशा में सही उद्देश्य को सामने रखकर लगातार की जाये , कुछ साल के लिए आलस्य और तंद्रा को तिलांजलि देकर, तो सफलता को मजबूत होकर आपके जीवन का हिस्सा बनना पड़ता है । क्योंकि इसके अलावा और कोई विकल्प बचता ही नहीं है ।

# आओ याद करें शहीदे आजम भगतसिंह के सच्चे साथी सुखदेव को...

शहीद सुखदेव को भारत के उन प्रसिद्ध क्रांतिकारियों और शहीदों में गिना जाता है, जिन्होंने अल्पायु में ही देश के लिए शहादत दी। भगत सिंह और सुखदेव एक दूसरे से गहरे जुडे हुए थे और चिंतन दृष्टि से दोनों बहुत आगे थे। गिरफ्तार होने के बाद सुखदेव का महात्मा गांधी के नाम खुला पत्र इसका प्रमाण है कि ये वीर नौजवान किस कदर उन्नत विचारों से भरा था। सुखदेव का पूरा नाम सुखदेव थापर था। देश के और दो अन्य क्रांतिकारियों-भगत सिंह और राजगुरु के साथ उनका नाम जोड़ा जाता है। ये तीनों ही देशभक्त क्रांतिकारी आपस में अच्छे मित्र और देश की आजादी के लिए अपना सर्वत्र न्यौछावर कर देने वालों में से थे। 23 मार्च, 1931 को भारत के इन तीनों वीर नौजवानों को एक साथ फांसी दी गई। वो क्रांतिकारी भगतसिंह के निकट साथियों में थे जिन पर वो अगाध स्नेह और श्रद्धा भाव रखते थे। सुखदेव का जन्म 15 मई, 1907 को गोपरा, लुधियाना, पंजाब में हुआ था। उनके पिता का नाम रामलाल था, जो अपने व्यवसाय के कारण लायलपुर में रहते थे। इनकी माता रल्ला देवी धार्मिक विचारों की महिला थीं। दुर्भाग्य से जब सुखदेव तीन वर्ष के थे, तभी इनके पिताजी का देहांत हो गया। इनका लालन-पालन इनके ताऊ अचिंत राम ने किया। वे आर्य समाज से प्रभावित थे तथा समाज सेवा व देशभक्तिपूर्ण कार्यो में अग्रसर रहते थे। इसका प्रभाव बालक सुखदेव पर भी पड़ा। जब बच्चे गली-मोहल्ले में शाम को खेलते तो सुखदेव अस्पृश्य कहे जाने वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान करते थे। सन 1919 में हुए जलियांवाला बाग के भीषण नरसंहार के कारण देश में भय तथा उत्तेजना का वातावरण बन गया था। इस समय सुखदेव 12 वर्ष के थे। पंजाब के प्रमुख नगरों में मार्शल लॉ लगा दिया गया था।

स्कूलों तथा कालेजों में तैनात ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय छात्रों को सैल्यूट करना पड़ता था। लेकिन सुखदेव ने दृढ़तापूर्वक ऐसा करने से मना कर दिया, जिस कारण उन्हें मार भी खानी पड़ी। लायलपुर के सनातन धर्म हाईस्कूल से मैट्रिक पास कर सुखदेव ने लाहौर के नेशनल कालेज में प्रवेश लिया। यहां पर सुखदेव की भगत सिंह से भेंट हुई। दोनों एक ही राह के पथिक थे, अतः शीघ्र ही दोनों का परिचय गहरी दोस्ती में बदल गया। दोनों ही अत्यधिक कुशाग्र और देश की तत्कालीन समस्याओं पर विचार करने वाले थे। इन दोनों के इतिहास के प्राध्यापक जयचंद्र थे, जो कि इतिहास को बड़ी देशभक्तिपूर्ण भावना से पढ़ाते थे। विद्यालय के प्रबंधक भाई परमानन्द भी जाने-माने क्रांतिकारी थे। वे भी समय-समय पर विद्यालयों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करते थे। यह विद्यालय देश के प्रमुख विद्वानों के एकत्रित होने का केंद्र था तथा उनके भी यहां भाषण होते रहते थे। वर्ष 1926 में लाहौर में नौजवान भारत सभा का गठन हुआ। इसके मुख्य योजक सुखदेव, भगत सिंह, यशपाल, भगवती चरण व जयचन्द्र विद्यालंकार थे। असहयोग आंदोलन की विफलता के पश्चात नौजवान भारत सभा ने देश के नवयुवकों का ध्यान आकृष्ट किया। प्रारंभ में इनके कार्यक्रम नैतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक विचारों पर विचार गोष्ठियां करना, स्वदेशी वस्तुओं, देश की एकता, सादा जीवन, शारीरिक व्यायाम तथा भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता पर विचार आदि करना था। इसके प्रत्येक सदस्य को शपथ लेनी होती थी कि वह देश के हितों को सर्वोपरि स्थान देगा परन्तु कुछ मतभेदों के कारण इसकी अधिक गतिविधि न हो सकी। अप्रैल, 1928 में इसका पुनर्गठन हुआ तथा इसका नाम नौजवान भारत सभा ही रखा गया तथा इसका केंद्र अमृतसर बनाया गया।

सितंबर, 1928 में ही दिल्ली के फिरोजशाह कोटला



प्रलय होने पर समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़ देते हैं लेकिन सज्जन लोग महाविपत्ति में भी मर्यादा को नहीं छोड़ते। –चाणक्य

के खंडहर में उत्तर भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों की एक गुप्त बैठक हुई। इसमें एक केंद्रीय समिति का निर्माण हुआ। संगठन का नाम हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रखा गया। सुखदेव को पंजाब के संगठन का उत्तरदायित्व दिया गया।

सुखदेव के परम मित्र शिव वर्मा, जो प्यार में उन्हें विलेजर कहते थे, के अनुसार भगत सिंह दल के राजनीतिक नेता थे और सुखदेव संगठनकर्ता, वे एक-एक ईंट रखकर इमारत खड़ी करने वाले थे। वे प्रत्येक सहयोगी की छोटी से छोटी आवश्यकता का भी पूरा ध्यान रखते थे। साइमन कमीशन के भारत आने पर हर ओर उसका तीव्र विरोध हुआ। पंजाब में इसका नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे। 30 अक्टूबर को लाहौर में एक विशाल जुलूस का नेतृत्व करते समय वहां के डिप्टी सुपरिटेंडेंट स्कार्ट के कहने पर सांडर्स ने लाठीचार्ज किया, जिसमें लालाजी घायल हो गए। पंजाब में इस पर तीखी प्रतिक्रिया हुई। 17 नवंबर, 1928 को लाला जी का देहांत हो गया। उनके शोक में स्थान-स्थान पर सभाओं का आयोजन किया गया। सुखदेव और भगत सिंह ने एक शोक सभा में बदला लेने का निश्चय किया। एक महीने बाद ही स्कार्ट को मारने की योजना थी, परन्तु गलती से उसकी जगह सांडर्स मारा गया। इस सारी योजना के सूत्रधार सुखदेव ही थे। वस्तुतः सांडर्स की हत्या चितरंजन दास की विधवा बसन्ती देवी के कथन का सीधा उत्तर था, जिसमें उन्होंने कहा था, क्या देश में कोई युवक नहीं रहा? सांडर्स की हत्या के अगले ही दिन अंग्रेजी में एक पत्रक बांटा गया, जिसका भाव था लाला लाजपत राय की हत्या का बदला ले किया गया।

8 अप्रैल, 1929 को भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने ब्रिटिश सरकार के बहरे कानों में आवाज पहुंचाने के लिए दिल्ली में केंद्रीय असेम्बली में बम फेंककर धमाका किया। स्वाभाविक रूप से चारों ओर गिरफ्तारी का दौर शुरू हुआ। लाहौर में एक बम बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गई, जिसके फलस्वरूप 15 अप्रैल, 1929 को सुखदेव, किशोरी लाल तथा अन्य क्रांतिकारी भी पकड़े गए। सुखदेव चेहरे-मोहरे से जितने सरल लगते थे, उतने ही विचारों से दृढ़ व अनुशासित थे। उनका गांधी जी की अहिंसक नीति पर जरा भी भरोसा नहीं था। उन्होंने अपने ताऊजी को कई पत्र जेल से लिखे। इसके साथ ही महात्मा गांधी को जेल से लिखा उनका पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो न केवल देश की तत्कालीन स्थिति का विवेचन करता है, बल्कि कांग्रेस की मानसिकता को भी दर्शाता है। उस समय गांधी जी अहिंसा की दुहाई देकर क्रांतिकारी गतिविधियों की निंदा करते थे। इस पर कटाक्ष करते हुए सुखदेव ने लिखा, मात्र भावुकता के आधार पर की गई अपीलों का क्रांतिकारी संघर्षों में कोई अधिक महत्व नहीं होता और न ही हो सकता है।

सुखदेव ने तत्कालीन परिस्थितियों पर गांधी जी को एक पत्र में लिखा, आपने अपने समझौते के बाद अपना आन्दोलन (सविनय अवज्ञा आंदोलन) वापस ले लिया है और फलस्वरूप आपके सभी बंदियों को रिहा कर दिया गया है, पर क्रांतिकारी बंदियों का क्या हुआ? 1915 से जेलों में बंद गदर पार्टी के दर्जनों क्रांतिकारी अब तक वहीं सड़ रहे हैं। बावजूद इस बात के कि वे अपनी सजा पूरी कर चुके हैं। मार्शल लॉ के तहत बंदी बनाए गए अनेक लोग अब तक जीवित दफनाए गए से पड़े हैं। बब्बर अकालियों का भी यही हाल है। देवगढ़, काकोरी, महुआ बाजार और लाहौर षड्यंत्र केस के बंदी भी अन्य बंदियों के साथ जेलों में बंद है।... एक दर्जन से अधिक बन्दी सचमुच फांसी के फंदों के इन्तजार में हैं। इन सबके बारे में क्या हुआ? सुखदेव ने यह भी लिखा, भावुकता के आधार पर ऐसी अपीलें करना, जिनसे उनमें पस्त-हिम्मती फैले, नितांत अविवेकपूर्ण और क्रांति विरोधी काम है। यह तो क्रांतिकारियों को कुचलने में सीधे सरकार की सहायता करना होगा। सुखदेव ने यह पत्र अपने कारावास के काल में लिखा। गांधी जी ने इस पत्र को उनके बलिदान के एक मास बाद 23 अप्रैल, 1931 को यंग इंडिया में छापा। ब्रिटिश सरकार ने सुखदेव, भगत सिंह और राजगुरु पर मुकदमे का नाटक रचा। 23 मार्च, 1931 को उन्हें लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दे दी गई। देशव्यापी रोष के भय से जेल के नियमों को तोड़कर शाम को साढ़े सात बजे इन तीनों क्रांतिकारियों को फांसी पर लटकाया गया। भगत सिंह और सुखदेव दोनों एक ही सन में पैदा हुए और एक साथ ही शहीद हो गए।

# RWA, सोसाइटी, लोकैलिटी के असली मैनेजमेंट गुरु पड़दादा चौधरी दरियाव सिंह मलिक व् पड़दादा चौधरी लछ्मण सिंह मलिकः

- फूल मलिक

हरियाणवी सामाजिक सरंचना (जिसके मूल में जेंडर इक्वलिटी व् सेंसिटिविटी पूरे हिंदुस्तान में सबसे ज्यादा रही है, जो भाईचारे की जननी है) की इतनी खस्ताहालत क्यों हुई जा रही है, तो आज अकस्मात ही मेरे यह दोनों पड़दादा याद आये ।

पहले वाले मेरे ककेरे पड़दादा हैं व् दूसरे सगे पड़दादा । इन पुरखों की सजगता–जागरूकता–.दृढ़ता व् सोसाइटी मैनेजमेंट व् उसका प्रभाव यह रही कि मेरे दादा वाली पीढ़ी तक 100 प्रतिशत वही चला जो ''उदारवादी जमींदारी की हरयाणवी थ्योरी'' के अनुसार चलना चाहिए । गड़बड़ होनी शुरू हुई मेरे पिता–काका–ताऊ–फूफा–मामा–माँ–काकी–ताई–बुआ–मामी– मौसी वाली पीढ़ी से । परन्तु इनके आगे फिर मेरे जैसे बैठे हैं जो जुनूनी हद तक अपने पड़दादा–दादाओं वाला काउन्सलिंग सिस्टम, सोशल इंजीनियरिंग



अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। – मनु

सिस्टम बहाल करने को आतुर हैं, उसको उसकी डिजर्विंग पहचान लौटने को जागरूक हैं । जो पिता–काका–ताऊ–फूफा–मामा वाली–माँ–काकी–ताई–बुआ–मामी–मौसी एक पीढ़ी में आई खराबी को अपने से आगे जाने देने को तैयार नहीं ।

तो कौनसी काउन्सलिंग, कौनसी सोशल इंजीनियरिंग, कौनसी सोसाइटी मैनेजमेंट व् कौनसी खराबी ?:

जब बचपन में जिंद (जिंद ले गया दिल का जानी वाला जिंद, जींद नहीं) से छुट्टियों में घर जाता था और दादी घर पर नहीं मिलती थी तो माँ से एकाध बार यह सुनने को मिल जाता था कि दादा दरियाव सिंह जो लगभग हर पखवाड़े–महीने ठोले की औरतों से ठोला मीटिंग (**RWA** की भाषा में सोसाइटी मीटिंग) करते हैं (मॉडर्न भाषा में काउन्सलिंग भी कह सकते हैं) वहां गई हुई हैं । और काउन्सलिंग में मुख्यतः ढोंग–पाखंड–आडंबर से अपनी औरतों व् ठोले को सचेत रखने, किसी का आपस में या घर के मर्दों में झगड़ा लगा हुआ हो तो उसको निबटवाने व् कोई खुद या उसके घर का मर्द बगड़–ठोले के कायदे–कानून से अलग चल रही/रहा हो तो उसको सचेत करने बारे बातें होती थी। किसी को अच्छी डांट सुनने को मिलती तो किसी की प्रसंशा भी होती। अरे ठीक वैसे ही जैसे आज के दिन शहरों की **RWA** यानि सोसाइटी यानि लोकैलिटी की मीटिंग्स होती हैं बिलकुल इन्हीं मुद्दों पर, या नहीं होती? कुछ अल्ट्रा–मॉडर्निटी की मद में मूंदे हुए मंदबुद्धि अब इस पर नाक–भों सिकोड़ेंगे क्योंकि उनको लगता है कि यह सिस्टम तो सिर्फ उनके ईजाद किये हुए हैं (वह भी शहरों में आने के बाद) यह जाटों के यहाँ इतनी पीढ़ियों पहले किधर से आ गए वह भी गाम वाले जाटों के यहाँ?

खैर, यह बातें ज्यादा सालों तक सुनने को नहीं मिली । क्यों नहीं चली, इस पर कोई शोध नहीं दीखता, शोध करके सामने आई कमियों का समाधान नहीं दीखता । मेरे दसवीं तक आते–आते तो बिलकुल ही बंद हो चुकी थी । और इन काउन्सलिंग की जगह सतसंग–जागरण वाले लेने को फिरते थे । यही वह वक्त था जब यह सक्रिय हुए थे और टीवी क्रांति हुई थी (जिसने इनको जाटों के कल्चर व् सोसाइटी सिस्टम में सेंधमारी करने का जबरदस्त मौका दिया) और इनके दांव लगने शुरू हुए थे । और जब से जाटों ने अपनी औरतों संग बैठ यह काउन्सलिंग छोड़ के यह सतसंग–जागरण अपनाएँ हैं तब से ना सिर्फ हरयाणवी कल्चर की दुर्गति हुई जाती है वरन ऐसी अदृश्य महाभारत हर घर में घुसेड़ दी गई है जिसकी थ्योरी में सगा भाई, सगे बहन तक दुश्मन नजर आते हैं परन्तु प्रैक्टिकल में छिपी ही कोई दुश्मनी दिखती हो । पहले वाले मर्द अपनी औरत से कोई बात कहते हुए नहीं डरते थे परन्तु आज वाले घर की औरत की बात के अलग कोई बात कहने तक डरते हैं । यानि जिस कल्चर में मर्द–औरत की आपसी काउन्सलिंग से घर–संसार चलते थे, उनके घरों में यह चीजें क्यों घुसी? और जानते हो सबसे हास्यास्पद बात? यह बातें घुसाने वाले दुनिया की सबसे घटिया मर्दवादी सोच के लोग हैं, वह कैसे कभी किसी अन्य लेख में, अन्यथा लेख लम्बा हो जायेगा।

अब बात करते हैं हमारे लेख के दूसरे सोसाइटी मैनेजमेंट गुरु कीः दादा दरियाव सिंह से पहले यही रूतबा उनके बड़े ताऊ के लड़के व् मेरे सगे दादा चौधरी लछमन सिंह का होता था । उस वक्त तो बल्कि और व्यापक होता था । दादा दरियाव सिंह तो सिर्फ गरधालों (हमारा ठोला) की औरतों–बच्चों से काउन्सलिंग करते थे, जबकि दादा लछ्मण सिंह तो ''गरधाले–भज्जन–गड़गे–उदमी के'' सबकी औरतों को हमारे पुराने बगड़ में (शहरी भाषा में सोसाइटी, लोकैलिटी) ऐसे सुरक्षित रखते थे जैसे मुर्गी अंडे सेती है । क्या मजाल कि कोई मोड्डा–उठाईगिरा तो दूर, चूड़ियाँ बेचने वाला मनियार तक पड़दादा की इजाजत बिना बगड़ में पाँव धर सकता । इसको तानाशाही या दबंगई मत बोलना क्योंकि शहरों की लोकैलिटी में तुम भी बिना इजाजत के गेट पर सिग्नेचर के नहीं घुस सकते । इतना फर्क और है आज की लोकैलिटी और उन बगड़ों में कि लोकैलिटी यानि सोसाइटी की सुरक्षा हेतु भाड़े के ''वॉचमैन'' बिठाये जाते हैं जबकि जाटों के बगड़ों का वॉचमैन उस बगड़ का सबसे सुच्चा वृद्ध (कोई भी वृद्ध नहीं) होता था, जो किसी पैसे की कमाई के लालच हेतु नहीं अपितु अपनी औलादों की सुरक्षा, सम्मान व् कल्चर को बचाये रखने हेतु वहां बैठता था । दादी का बताया वह मनियार वाला किस्सा मुझे आज भी याद है जिसमें दादी बताती थी कि कैसे एक मनियार गलती से बगड़ में घुस आया और बाद में तेरे पड़दादा के भय से पीछे की हवेलियों की छतों से साइकिल समेत दूसरी गली से कुदवाना पड़ा था । दादी ने बगड़ में होने वाले हंसी–ठठों–उल्लासों के भी बहुत किस्से सुनाये थे वह फिर कभी ।

सही में समाज के मार्गदर्शक–संरक्षक–सृजनकर्ता तो यह पुरखे होते थे, इन दो के बारे तो मैंने देखा–सुना हुआ है। परन्तु यह रिले–रेस टाइप बैटन पीढ़ी–दर–पीढ़ी पास होती आती थी, परन्तु मेरे पिता–काका–ताऊ–फूफा–मामा–माँ–काकी–ताई– बुआ–मामी–मौसी की पीढ़ी आने के बाद से बंद है। और तभी से जाट कम्युनिटी चील–गिद्दों की भांति मंडराते फंडियों–मीडियों आदि की सबसे ज्यादा सॉट–टार्गेटिंग झेल रही है । और झेलती रहेगी अगर इस समाज ने उन्हीं चीजों जिनको इनके पुरखे, इनसे अच्छी मैनेजमेंट में रखते थे को गंवार–गाँवटी बता अपने थोथे घमंड के मुंह ऊपर रखने बंद नहीं किये और जिन **RWA** कल्चर को यह तथाकथित शायद 21वीं सदी की देन मानते हैं इसकी जड़ें अपने पुरखों के इस सिस्टम से नहीं जोड़ी तो । रॉयलिटी की फील लेना चाहते हो तो जोड़ो इनको, वरना फुकरों की भाँती अपनी जड़ों से छिंटक बिदकते भटकना चाहते हो तो वही मेरी दादी वाली बात बेशक 14 बार भटको । अपनी औरतों (सिर्फ अपनी धर्मपत्नी नहीं, बहुतों के लिए तो बस औरत के नाम पर यही एक नाम होता है, बल्कि पूरे ठोले–पान्ने की भांति दायरा फैलाओ, परन्तु हाँ इस सुझाव को कोई अपनी बदनीयती की पूर्ती का जरिया मत मान लेना, वरना लठ भी बहुत सुथरे लग जाया करें) के साथ अपने पुरखों की भांति कौन्सेलिंग्स शुरू नहीं की तो । कहीं बाहर मत ढूंढना जाट बनाम नॉन–जाट क्यों हुआ तुम्हारे साथ, जवाब तुम्हारे पुरखों के पास है, उनकी सोसाइटी मैनेजमेंट की तरफ मुड़ के तो देखो ।

वैसे कहने को बहुत रह गया, लिखने को बहुत रह गया इस विषय पर, शायद एक किताब जितना परन्तु फिलहाल इतनी ही।

जय यौद्धेय!

पेज–1 का शेष

## "Bhai Surinder Singh Malik Memorial On The Spot All India Essay Writing Competition" For College/University Students & School Students of Class X, XI & XII on 04th July, 2019.

Jat Sabha, Chandigarh organizes **Bhai Surinder Singh Malik Memorial on the Spot All India Essay Writing Competition** for College/University and school students of classes X, XI & XII every year. This year Competition will be held on 04.07.2019 at the following Centres from 10 to 11 A.M. in two categories i.e. Urban and Rural areas.

| Sr. No | Name & Address of Centre | Name of Controller of Examination. |
|---|---|---|
| 1. | Moti Ram Arya Senior Secondary Sector 27-A, Chandigarh. | Dr. Seema Biji, Principal |
| 2. | Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Dalip Singh Malik, Director |
| 3. | Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls SR. Sec. School, Nidani (Jind) | Mrs. Rajwanti Malik, Principal |
| 4. | Government Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana) | Mrs. Lata Saini, Principal |
| 5. | Government Senior Secondary School Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Sunil Kumar, Principal |
| 6. | Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Satish Chug, Principal |
| 7. | Shiv Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind (Haryana) | Sh. J. S. Kalonia, Director |
| 8. | Government Girls Sr. Sec. School Julana, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Geeta Ram Sharma, Principal |
| 9. | Government Senior Secondary School Julana, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Rakesh Kapoor, Principal |
| 10. | Kanya Gurukul Sadi Pur Julana, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Ved Pal Lather, Secretary |
| 11. | M.R.C.R. Public School, Julana, Distt. Jind (Haryana) | Mrs. Kiran Bala, Principal |
| 12. | R.P.S. Public School, Julana, Distt. Jind (Haryana) | Mrs. Salil Mehta, Principal |
| 13. | Government Senior Secondary School Kilazaffargarh, Distt. Jind (Haryana) | Sh. Pawan Bhola, Principal |
| 14. | C. L. DAV Senior Secondary School Sector 11, Panchkula. | Mrs. Anjali Marriya, Principal |
| 15. | Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula. | Mrs. Suman Deswal, Principal |
| 16. | Bhawan Vidyalaya, Sector 15, Panchkula. | Mrs. Shahsi Bala Banerjee, Principal |

The Competition offers an opportunity to the young students to participate in the national building through their rich thoughts and noble deeds. This prestigious competition offers the following prizes for Urban as well as Rural areas:-
**First Prize** - Gold Medal & cash Rs. 5100/-, **Second Prize** - Silver Medal & cash Rs. 3100/-, **Third Prize** - Bronze Medal & Cash Rs. 2100/-, **Consolation Prize** - First + cash Rs. 1500/-, Second - Rs. 1000, Third - Rs. 900 & Other 6 Prize Rs. 600 Each.

---

# संग्रहालयों से समृद्ध है हरियाणा की धरती

### 18 मई को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर विशेष आलेख

– प्रो० धर्मेंद्र कंवारी

सांस्कृतिक दृष्टि से हरियाणा समृद्ध प्रदेश रहा है। यहां की सांस्कृतिक परम्पराओं एवं समृद्धता को यहां के संग्रहालयों में संजोया गया है। वेदों की रचना इसी नदी के तट पर हुई। गीता की जन्मस्थली एवं कर्मस्थली कुरुक्षेत्र यहां की सांस्कृतिक धरोहर का केन्द्र रही है। इसके अतिरिक्त सुघ, पिंजौर, मिथाथल, राखीगढ़ी, बनावली, भगवानपुरा, खोखराकोट, मोहनबाड़ी, बालु तथा फरमाणा महम आदि ऐसे पुरातात्विक स्थल रहे हैं, जिनकी धरोहर को आजतक किसी एक स्थान पर एकत्रित कर किसी राजकीय संग्रहालय



हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

का नामकरण नहीं दिया गया है। हरियाणा के बनने के बाद सर्वप्रथम आचार्य ओमानंद सरस्वति ने इस दिशा में सार्थक कदम उठाए और उन्होंने गांवों में घूम–घूमकर हरियाणा की पुरातात्विक संस्कृति को एकत्रित कर गुरुकुल झज्जर में हरियाणा के अत्यंत समृद्ध संग्रहालय का निर्माण किया। हरियाणा के इस संग्रहालय में हरियाणा की पुरातात्विक विरासत का जो खजाना छिपा है, उसको यदि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किया जाए, तो हरियाणा की छवि संग्रहालय दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आ जाएगी।

इसी कड़ी में लीलाधर दुखी ने सिरसा में एक संग्रहालय की स्थापना की, जिसमें सिरसा के आस–पास के क्षेत्रों की खुदाई से जो पुरातात्विक अवशेष मिले, उनको एक स्थान पर एकत्रित किया गया है। इनमें अनेकों अवशेष हमारी प्राचीन सरस्वती धरोहर से भी सम्बन्धित हैं। साल 2002 में पानीपत में पानीपत युद्ध स्मारक संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसमें पानीपत में हुई तीनों लड़ाइयों से सम्बन्धित दस्तावेज एवं हथियारों को सहेजकर रखा गया है। हरियाणा में संग्रहालय संस्कृति को सबसे अधिक संरक्षित करने का काम कुरुक्षेत्र में हुआ है, इसीलिए कुरुक्षेत्र को संग्रहालयों की नगरी कहा गया है।

वर्ष 1991 में यहां पर श्रीकृष्ण संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसमें हरियाणा की नहीं, अपितु श्रीकृष्ण के जीवन से सम्बन्धित अनेक पुरातात्विक धरोहर जो संपूर्ण भारत में बिखरी पड़ी थी, एक स्थान पर एकत्रित करने का प्रयास किया गया है। अब यहां पर महाभारत के अठारह दिनों की लड़ाई की डिजीटल गैलरी भी स्थापित हो चुकी हैं। इसके साथ ही स्थिति पैनोरमा विज्ञान संग्रहालय की स्थापना वर्ष 2००1 में की गई थी। संग्रहालय में महाभारत के युद्ध एवं भारत की पुरातन वैज्ञानिकता को चित्रों एवं प्रयोगों के माध्यम से दर्शाया गया है। यहां पर स्थित 2002 में शेखचेहली मकबरे में स्थिति आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना हुई है। इस संग्रहालय में हरियाणा की पुरातात्विक विषय–वस्तुओं को दर्शाया गया है। संग्रहालय में हर्षवर्धन टीले पर की गई खुदाई में जो अवशेष मिले, उनको प्रदर्शित किया गया है।

यहां पर 2005 में गुलजारीलाल नंदा संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसमें गुलजारीलाल नंदा के जीवन की समस्त उपलब्धियों को संग्रहालय के माध्यम से दर्शाया गया है। यहां पर एक पुस्तकालय भी है, जिसमें शोधार्थी शोध करते हैं। आजकल यह संग्रहालय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के तत्वावधान में कार्यरत है। इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के तत्वाधान में हरियाणा के अलग–अलग क्षेत्रों में की गई खुदाई को लेकर विभाग में एक संग्रहालय की स्थापना की गई। यह संग्रहालय आंशिक रूप से आज भी सजीव है। इसके चलते 2006 में विश्वविद्यालय में धरोहर हरियाणा संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसमें हरियाणवीं संस्कृति के विविध आयाम देखने को मिलते हैं, इस संग्रहालय को अब तक 25 लाख से अधिक लोग देख चुके हैं। इसके अतिरिक्त हरियाणा के रण–बाकुंरों का 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को लेकर धरोहर परिसर में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का संग्रहालय स्थापित किया गया है, जिसमें हरियाणा के 1857 के शौर्यात्मक इतिहास को दर्शाया गया है।

कुरुक्षेत्र में ही मेजर नितिन बाली संग्रहालय की स्थापना भी की गई है, जिसमें मेजर नितिन बाली के जीवन को लेकर उनकी यादों तथा फौज से सम्बन्धित साजो–सामान को प्रदर्शित किया गया है। पिछले दिनों हरियाणा सरकार ने पिंजौर के भीमादेवी मंदिर में भी एक संग्रहालय की स्थापना की है, जिसमें पुरातात्विक आधार पर की गई खुदाई के माध्यम से जो साजो–सामान मिला है, उसको प्रदर्शित किया गया है। 2007 में जींद के जयंती देवी मंदिर में जींद रियासत तथा हरियाणवीं संस्कृति से जुड़ी हुई विषय–वस्तुओं से लेकर एक संग्रहालय की स्थापना की गई, जो वर्तमान स्वरूप में हरियाणा सरकार के पुरातात्विक विभाग के अंतर्गत कार्यरत है। इसी कड़ी में महार्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में भी स्वतंत्रता सेनानी गैलरी की स्थापना की गई है, जिसमें हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानियों के महत्वूपर्ण योगदान को उजागर किया गया है।

हाल ही में, हरियाणा के महान कलाकार राजकिशन नैन की चित्रदीर्घा भी स्थापित की गई है, जिसमें हरियाणा के लोकजीवन से सम्बन्धित सैंकड़ों चित्र हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत से आम आदमी का परिचय करवाते हैं। वर्ष 2003–04 में सांपला में चौ. छोटूराम के जीवन को लेकर एक संग्रहालय की स्थापना की गई थी, जिसका जीर्णोद्धार 2018 में किया गया है। जिसमें चौ. छोटूराम के जीवन से जुड़ी हुई विषय–वस्तुओं को लाहौर से लाकर यहां पर स्थापित किया गया है।

उधर डी.एन. कॉलेज हिसार में भी हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर से सम्बन्धित कुछ विषय–वस्तुओं को संकलित करने का प्रयास किया गया है। कैथल के पुण्डरी में भी आस–पास के क्षेत्र की खुदाई में जो साजो–सामान निकला है, उसको लेकर पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया गया है, जो छोटे स्तर का है। हरियाणा के कृषि–विश्वविद्यालय में भी हरियाणा की खेती–बाड़ी से सम्बन्धित विषय–वस्तुओं को पिछले कईं दशकों में एकत्रित कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। संग्रहालय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा पुलिस संभवतः देश की पहली ऐसी पुलिस है, जिसके पास हरियाणा के पुलिस इतिहास को लेकर आधुनिक संग्रहालय है।

2008 में हरियाणा पुलिस अकादमी में हरियाणा पुलिस संग्रहालय की स्थापना की गई थी, जिसमें 20 से अधिक गैलरियों के माध्यम से पुलिस के इतिहास को संजोया गया है। भगत फूल सिंह विश्वविद्यालय, खानपुर कला में भी हरियाणवीं संस्कृति को लेकर साजो–सामान एकत्रित किया गया है, लेकिन अभी उसे संग्रहालय के रूप में परिवर्तित नहीं किया गया है। इसके अलावा चौ. देवीलाल विद्यापीठ सिरसा में भी चौ. देवीलाल के जीवन को लेकर संग्रहालय की स्थापना की जा चुकी है, जिसमें चौ. देवीलाल के संपूर्ण जीवन की विकास गाथा को दर्शाया गया है।

रोहतक में संविधान स्थल पर चौ. रणबीर सिंह मैमोरियल संग्रहालय की स्थापना भी की गई है। पंचकूला भीमा देवी



जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

कॉम्पलेक्स में एक पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया गया है जिसमें खुदाई में निकली मूर्तियों को दिखाया गया है। हिसार का पुरातात्विक संग्रहालय भी हिसार से खुदाई में निकली गई विषय–वस्तुओं का प्रदर्शन का मुख्य केन्द्र है। यमुनानगर के कपालमोचन में भी सिख संस्कृति से संबंधित विषय–वस्तुएं संग्रहालय में दिखाई गई हैं। पुरातात्विक विभाग द्वारा राई में भी एक छोटा सा संग्रहालय स्थापित किया गया है। इसके साथ ही आदि बद्री एवं विद्या भारती कुरुक्षेत्र में सरस्वती संग्रहालय की स्थापना की गई है जिसमें सरस्वती देवी एवं नदी से जुड़ी हुई विषय–वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है।

सोनीपत में इन्द्रप्रस्थ संग्रहालय में हरियाणवी संस्कृति एवं सोनीपत के इतिहास को संग्रहालय के रूप में दर्शाया गया है। कुरुक्षेत्र में जियो गीता के तत्वावधान में गीता से संबंधित संग्रहालय स्थापित किया जा रहा है जिसमें गीता से जुड़ी हुई बीस गैलरियां स्थापित करने की परियोजना है। कुरुक्षेत्र में जगतगुरु ब्रह्मानन्द के संग्रहालय का निर्माण शुरू हो चुका है। इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र के एक गांव में भगत सिंह को केंद्रीत कर संग्रहालय निर्माण की परियोजना को भी शीघ्र ही अमलीजामा पहनाया जा रहा है। करनाल, रोहतक, जीन्द अनेक स्थलों पर सरकारी भवनों में छोटे संग्रहालय बनाने की परियोजना भी शुरू की जा रही है। हरियाणा की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विख्यात कुरुक्षेत्र एकमात्र ऐसा शहर है जो संग्रहालयों के शहर के नाम से जाना जाता है। हरियाणा में अनेकों ऐसे समर्पित लोग हैं, जो संग्रहालिय संस्कृति से जुड़े हुए हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत स्तर पर अनेक क्षेत्रों में अलग–अलग विषय–वस्तुओं को संकलित किया हुआ है। हरियाणा राज्य की स्थापना 1 नवंबर 1966 को हुई थी, किन्तु अभी तक हरियाणा में कोई राजकीय संग्रहालय नहीं है। इस दिशा में प्रयास जारी हैं। संभवतः आने वाले दिनों में हरियाणा को राजकीय संग्रहालय मिल ही जाए। पिछले एक दशक में हरियाणा में संग्रहालय स्थापित करने के क्षेत्र में जो जागरूकता आई है, उससे आने वाले दिनों में संग्रहालयों की दृष्टि से हरियाणा प्रदेश अपने आस–पास के राज्यों में कहीं आगे दिखाई देगा। प्रत्येक हरियाणावासी का मूल कर्तव्य बनता है कि वह अपनी परम्परागत संस्कृति को संजोकर आने वाली पीढ़ी से उसको रू–ब–रू करवाए, ताकि यूरोप के देशों की भांति हमारे लोगों में भी संग्रहालय संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा हो और अपने पुरातन इतिहास को समेटने में महत्वपूर्ण योगदान दें। आवश्यकता है राजकीय स्तर पर इस क्षेत्र में अत्यधिक ठोस कदम उठाने की, ताकि जिला स्तर पर, ब्लॉक स्तर पर तथा पुरातन हवेलियों में संग्रहालय संस्कृति को बढ़ावा दिया जा सके और अपनी परम्परागत विरासत को हमेशा के लिए संजोया जा सके।

# राजभक्ति ही देशभक्ति कहाँ है।

– डॉ0 धर्मचन्द्र विद्यालंकार

**राष्ट्र – राज्य कोई एक दिन की निर्मित नहीं है, उसे बनने में सदियों का समय लगा है। वैसे भी यह आधुनिक अवधारणा ही तो है। मध्यकाल में तो राष्ट्र की कोई सुसंगत परिभाषा ही हमें नहीं मिलती है। वैसे कहने को भले ही भारतीयों के अथवा हिन्दुओं के वैदिक साहित्य में अवश्य ही संगमनी जैसा सूक्त मिलता है, जिसमें 'अहम् संगमनी राष्ट्री वसूनाम्' कहा गया है तो पुरोहित लोग यह कहते हैं कि 'वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः'। अथवा माता भूमि अहं पुत्रो पथिव्यां' वहाँ पर अथर्ववेद में कहा गया है जोकि सबसे पीछे रचा गया था। वरना व्यावहारिक रूप से तो हमें अधिकतर भारतवर्ष में भी अलग–अलग कबीलों (अभिजनों) और जातियों अथवा वंशों के ही राज्य प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भी मिलते रहे हैं। क्या हुआ कोई दो–चार सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य या अशोक और हर्ष एवं विक्रमादित्य जैसे सार्वभौम और स्वयंप्रभू हो गुजरे हैं।**

**वरना हम यह देख सकते हैं कि भारतीय पश्चिमी भूभाग अथवा प्रान्त सिन्ध और पंजाब तक अधिक समय तक अफगानों या ईरानियों और यूनानियों के अधिकार में ही तो रहे हैं। अब्दाली अहमदशाह जोकि अफगानिस्तान का बादशाह था, उसका शासन भारतीय संयुक्त पंजाब पर्यन्त विस्तृत था। तो ईरानियों का अधिकार तो डेरियस और जरक्सीज के युग ईसा पूर्व चौथी–पाँचवी शताब्दियों से लेकर सासानी काल तीसरी–चौथी शताब्दियों तक भी सिन्ध और पंजाब पर बना रहा है। तो यूनानियों का शासन मौर्यकाल तक परवूनिस्तान से लेकर ब्लोचिस्तान और सिन्ध पर कई सदियों तक बना रहा था। इसीलिए कई अंग्रेज इतिहासकार विशेषकर ह्वीलर जैसे विद्वान तो भारत के विभाजन के पीछे इस अलगाव को ही देखते हैं। क्योंकि राजनीतिक रूप से सिंध, पंजाब और ब्लूचिस्तान तथा परवतूनिस्तान बहुल कम समय तक ही भारत के अभिन्न अंग रहे हैं। इसी प्रकार से कश्मीर पर तो चौंदहवीं शताब्दी से ही काबुल के शहन्शाहों का राज्याधिकार कायम हो गया था। वहाँ पर व्यापक धर्म–परिवर्तन का कारण भी यही रहा है। आजकल वहाँ पर जो अलगाववाद और उग्रवाद की ज्वाला जल रही है। कहीं–न–कहीं उसकी वह पृष्ठभूमि भी उसके लिए उत्तरदायी है ही।**

**पूरे–के–पूरे मध्य पूर्व काल (7वीं से 12वीं) तक हम भारतवर्ष नाना राजवंशों के शासनाधिकार में ही पाते हैं। यथा, यदि दक्षिण में चोल, पाण्ड्य और पल्लव तथा राष्ट्रकूट और आन्धवंश के शासन अलग प्रदेशों में स्थापित थे तो उत्तर–भारत में पाल और परिहार, पंवार, चंदेल, कल्चुरि और गुहलौत और चौहानों तथा चालुक्यों का शासन हम उ0प्र0 से**

लेकर गुजरात और महाराष्ट्र तक पाते हैं। केवल गुप्त–साम्राज्य ही अखिल भारतवर्षीय था। या उससे पहले मौर्य वंश का शासन ही राष्ट्रीय था। लेकिन भारत फिर भी एक स्वतंत्र राष्ट्र ही था, राज्य बेशक उसमें अलग–अलग राजवंशों का ही रहा है। अतएव इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि राज्य और राष्ट्र एक ही इकाई नहीं है। राष्ट्र कहीं राज्य से बडी और व्यापक ईकाई है। आधुनिक काल में अंग्रेजी शासन–काल में ही भारत ने राष्ट्र–राज्य का स्वरूप ग्रहण किया है। अफगानिस्तान और ईरान तथा अरब और यूरोप तक के देश इसी प्रकार से पहले छोटे–छोटे कबीलाई सामन्ता के ही अधीन राज्य थे। आधुनिक काल में जैसे ही उनमें आपसदारी की समझ कुछ विकसित हुई है, तभी अब राज्य (सरकार) और राष्ट्र (भावनात्मक) मिलकर ही वे राष्ट्र–राज्य बन सके हैं।

जैसेकि इंग्लैंड को राजा एगबर्ट ने ही सारे तीनों–चारों ही आर्यों के कबीलों के मेल–मिलाप से बनाया था। वहाँ पर सेक्सन, नारमन, जूट्स और ऐंजल कबीलों ने मिलकर ही एक राष्ट्रराज्य का अभिधान धारण किया है। इसी प्रकार से रोमन–साम्राज्य के पतन के पश्चात बरगन्ड़ी और भण्ड़ाल तथा आस्ट्रोगाथ एवं भिसीगाथ (वेनिस के दल–दल में बसने वाले) जाट कबीलों ने ही एकीकृत होकर उसे एक राष्ट्र का स्वरूप दिया है। लेम्बार्ड या लाम्बा और क्वात्रा (क्वात्रोची) और कडवासरा जैसे राजवंशों ने ही सिसली और बरगन्डी जैसे प्रदेशों के एकीकरण से ही तो उन्नसवीं शताब्दी में कहीं जाकर वह एक स्वयंप्रभूता सम्पन्न और स्वतंत्र राष्ट्र बन सका है। इसी प्रकार से जर्मनी नामक कोई राष्ट्र मध्यकाल में हमें नहीं मिलता। वह प्रर्शिया या पशा प्रान्त ही आस्ट्रिया का कहलाता था। आधुनिक काल में ही आस्ट्रिया की अधीनता के जुए को उतारकर वह एक स्वतंत्र राष्ट्र बन सका है। इसी प्रकार से फ्रांस भी एन्टिला के हूण–आक्रमणकारियों के बाद रोमन–साम्राज्य से अलग होकर क्लोविशक वंशज शॉर्लमैन हैमर के नेतृत्व में प्रफैंक कबीलों के नाम पर एक स्वतंत्र फ्रांस राष्ट्र बन सका है। वरना उससे पूर्व वह रोमन–साम्राज्य के अर्न्तगत एक गाल प्रदेश ही तो कहलाता था।

इंग्लैंड भी स्वयं में एक एकीकृत राज्य कहाँ है। उसमें भी वेल्स इंग्लैंड(ऐंजल कबीले की भूमि) और स्कॉटलैंड जैसे तीन उपदेश सम्मिलित हैं। कभी आयरलैंड और स्काटलैंड वासियों ने तीन–चार शताब्दियों तक इंग्लैंड के साम्राज्य से स्वतंत्र होने के लिए सतत रक्तिम संघर्ष किया था। लेकिन इंग्लैंड के शक्तिशाली साम्राज्यवादी शासन को उन्हें स्वतंत्रता कहाँ दी थी। अब जबकि वहाँ पर तीनों राज्यों की स्वतंत्रता के लिए मतदान कराया गया था, विगत वर्षों में तो वेल्स और स्कॉट लोगों ने स्वेच्छापूर्वक यूके अथवा एकीकृत राजसंघ के साथ रहने के लिए ही अपनी सहमति व्यक्त की थी। अतएव राज्य–राष्ट्रों का निर्माण अब कोई ठोक–पीट कर नहीं किया जा सकता। वह एक स्वैच्छिक सहअस्तित्व की ही तो अभिव्यक्ति है। आज कहीं आकर स्कॉट (तक्षक जाटों) को यह अनुभव हुआ है कि उनके आर्थिक हित या व्यावसायिक हित इंग्लैंड संघ के साथ ही सुरक्षित हैं। दूसरी ओर इंग्लैंड ने अब अपना सम्बन्ध यूरोपीय संघ से तोड लिया है क्योंकि उसके व्यापारिक या आर्थिक हित वहाँ पर सुरक्षित नहीं है।

अतएव राष्ट्र–राज्य जहाँ पर एक विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई है और समान रक्त–वंश और साँझे इतिहास की निर्मित हैं; वहीं पर वह एक स्वेच्छापूर्वक सहनिवास की भी तो उत्कट अभिव्यक्ति है। बलपूर्वक हम किसी राज्य या प्रान्त को अब अपना वशवर्ती नहीं बना सकते हैं। जैसेकि पिछले वर्षों में ही कोसाबो जैसा स्वतंत्र देश सर्बिया से अलग होकर बना है। उसने यू.एन.ओ. में अपनी स्वतंत्रता का संवैधानिक प्रस्ताव भेजकर स्वयं को स्वतंत्र और स्वयंप्रभू राष्ट्र बनवा लिया है। इसी प्रकार से सोवियत संघ से पृथक् होकर मध्येशिया के पाँच मुस्लिम बहुल राष्ट्र राज्य बने हैं। तो यूक्रेन जैसे राज्य ईसाई बहुल होते हुए भी स्वतंत्र राष्ट्र–राज्य बन गये हैं। अतएव एक समान धार्मिक मत या विश्वास भी कोई राष्ट्रीय एकता की आश्वस्ति या गारन्टी कहाँ है। यदि मत–पंथ के आधार पर ही स्वतंत्र देश बनते तो सारे इस्लामिक देशों को मिलकर एक ही राष्ट्र–राज्य के अर्न्तगत समाहित होने चाहिए था। इसी प्रकार से चालीसों ईसाई मतावलम्बी राष्ट्र एक ही संघ–राज्य के अंगभूत अवयव होते। तब तो बौद्धमतावलम्बी चीन–जापान, कोरिया उपमहाद्वीप से लेकर कम्बोडिया तक के हिन्द–चीनी राष्ट्र–राज्य एक ही राजनीतिक शासन–तंत्र के ही अधीन होते। उनकी तो बात छोडिये, नेपाल जोकि विश्व में अकेला ही हिन्दू बहुल राष्ट्र है भारत को छोडकर वह भी भारत का अभिन्न अंग क्यों नहीं है और तो क्या बंगला देश को पाकिस्तान स्वधर्मी होने के बावजूद साथ क्यों नहीं रख सका है।

अतएव केवल धर्म और संस्कृति भी कोई राष्ट्रीय एकता अथवा अखण्ड़ता के आधार नहीं है। हालांकि वह भी एक आन्तरिक आधार तो है ही। एक भूगोल की इकाई या देश किसी राष्ट्र की प्रथम पहचान है तो उस पर बसने वाले लोगों का आपसी भाईचारा अथवा उनका साँझा इतिहास भी उन्हें एकताबद्ध करता ही है। तीसरी विशेषता किसी राष्ट्र की भाषा और संस्कृति है तो राष्ट्र–राज्यों के लिए उसकी अपनी स्वतंत्र सरकार का होना भी नितान्त आवश्यक



किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। –स्वामी विवेकानंद

है। जैसेकि स्वतंत्रता पूर्व काल में भी भारत एक राष्ट्र तो था लेकिन तब राज विदेशी था। इसलिए वह राष्ट्र–राज्य कहाँ था। तब हम एक राष्ट्र के रूप में महात्मा गाँधी के कुशल नेतृत्व में राज के विरूद्ध संगठित होकर संघर्ष कर रहे थे। राज्य और सरकार में भी तो बहुत अन्तर है। राज्य यदि एक धर्मनिरपेक्ष शासन–तंत्र अथवा सरकार का वाचक है तो राजनीति उसमें व्यवस्था बनाने वाले संगठन का ही नाम है। अतएव राजा मात्र के प्रति अंधभक्ति ही राष्ट्रभक्ति कहाँ है। क्योंकि कोई सरकार जनता की शोषक और उत्पीडक भी तो हो सकती है। जबकि राज्य स्वयं में एक स्वायत्त यन्त्र ही तो है।

स्वेच्छाचारी और अत्याचारी अथवा अधिनायकवादी शासक अपनी इच्छा मात्र को ही केवल कानून मान बैठते हैं। जैसेकि फ्रफांस का सम्राट लुई सोलहवां मानता था। जो यह कहा करता था कि ''कानून क्या है, वह तो बस शासक की इच्छा भर ही है।'' तभी तो वहाँ पर 1789 ईस्वी में सर्वप्रथम राज्यक्रांति हुई थी। सामन्ती शासन–काल में भी मन्त्रीगण राजा को मन्त्रणा अथवा परामर्श देने के लिए नियुक्त किये जाते थे। लेकिन वे मन्त्रीगण जनता के प्रति उत्तरदायी कहाँ थे क्योंकि वे उसके द्वारा निर्वाचित फ्रखर प्रतिनिधि कहाँ थे। परन्तु जनतांत्रिक व्यवस्था में तो मन्त्रीगण जनता के ही प्रतिनिधि हैं; अतएव वे उसके लिए उत्तरदायी भी हैं तो राजा या शासक भी निर्वाचित नेता होने के कारण संसद या विधान सभा जैसे विधायी निकायों के प्रति उत्तरदायी हैं। लेकिन जनतंत्र में भी कई लोग प्रचण्ड बहुमत की शक्ति पाकर सर्वसत्तावादी बन बैठते हैं। जैसेकि जर्मनी में हिटलर बन बैठा था। भारतवर्ष में श्रीमती इन्दिरा गाँधी भी कुछ समय के लिए अधिनायकवादी बन बैठी थी तो हमारे वर्तमान महानायक भी निरकुंश होकर उसी पथ पर शनैः शनैः अग्रसर हो रहे है। उनके द्वारा उठाये गये नोटबंदी और जी.एस.टी. के निर्णय अधिनायकवादी ही तो थे।

जर्मनी में नीत्से जैसे अस्तित्ववादी दार्शनिक ने सुपरमैन का दर्शन दिया था जोकि भारतीय हिन्दू धर्म की अवतारवादी अवधारणा के अत्यन्त निकट ही था। जिसके आधार पर एक सर्वसत्तासम्पन्न शासक साधारण मानव न रहकर वह अतिमानव ही बन जाता है। पण्ड़ित पुरोहितों के लेखे क्योंकि वह ईश्वर का ही अंशभूत विग्रह– धारी लीलापुरूष होता है, श्री राम या श्रीकृष्ण चन्द्रादि की भाँति अतः वही अवतारधारी दिव्य पुरुष हैं। उसके प्रति जनमन में अन्धश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। जोकि सर्वथा विवेकशून्य ही तो होती है। वहाँ पर तर्क–वितर्क के लिए फिर अवकाश ही कहाँ बचता है क्योंकि वह तो अर्तक्य और अनिवर्चनीय अवतारी राजपुरुष जो मान लिया जाता है। अतएव उसके द्वारा लिए गये अनुचित और अविवेकी एवं अदूरदर्शी निर्णयों को जनता विवेकविहीन होकर सहजभाव से शिरोधार्य ही करती है। भला जहाँ पर चुनाव चर्चा और असहमति की गुंजाईश न हो, वहाँ पर तब जनतांत्रिक व्यवस्था उसको कैसे कहा जा सकता है। वह तो तब एकतंत्र शासन–प्रणाली में ही परिवर्तित हो जाती है। अतएव राजा के प्रति अंध–भक्ति ही राष्ट्रभक्ति या देशप्रेम कहाँ है। वह तो एक शासक के प्रति जन–मन का सर्वस्व समर्पण ही कहा जा सकता है।

क्योंकि राज्य या सरकार स्वयं में एक धर्म और जाति के निरपेक्ष संस्थान अथवा यन्त्र मात्र ही तो है। उसका अच्छा या बुरा होना उसका संचालन करने वाले शासकों की नीति और नीयत पर ही तो अवलम्बित है। आजकल भारत में जो एक–एक करके सारी संस्थाओं की स्वतंत्रता अथवा स्वायत्तता एक व्यक्ति विशेष के अबाध एकाधिकारवाद के कारण समाप्त की जा रही है; वह किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था और राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए हितकर कहाँ है। अब केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो से लेकर उच्चतम न्यायालय पर जो दलगत दबाव हैं, उनसे वे स्वतंत्र कार्य कलाप कब कर पा रहे हैं। 2 करोड की रिश्वत लेने वाले अपने प्रति अनन्य निष्ठ अधिकारों को ही अन्वेषण (राष्ट्रीय) संस्थान के शीर्ष पर क्यों बिठाया जाता है। यदि न्यायालय उसके विरूद्ध जाँच–समिति या आयोग बिठाये तो सरकार जाँचकर्ता पर ही मिथ्या आरोप लगाकर भी दोषियों की कतार में खडा क्यों कर देती है। भारत का उच्चतम न्यायालय चार–चार न्यायमूर्तियों की संस्तुति के पश्चात भी एक न्यायाधीश की संदिग्ध मृत्यु की जाँच क्यों नहीं करा पाता। क्या संस्थानों का इस प्रकार से एक व्यक्ति द्वारा अधिग्रहण जनतंत्र में उचित है।

आखिर संस्थाओं का नाम ही तो सरकार है। इन संस्थाओं का निर्माण कोई दो–चार दिनों में नहीं किया जा सकता। ये सरंचनाए मानव जाति के हजारों वर्षों के विवेक और अनुभव से ही तो निर्मित हुई हैं। यदि एक व्यक्ति अथवा दल विशेष ही सर्वाधिकार सम्पन्न होकर इनको अपने हित–लाभों के अनुरूप संचालित करेगा, तब तो ये संस्थाऐं स्वतंत्र और स्वायत्त कहाँ रह पायेंगी। फिर तो वे एक व्यक्ति के स्वार्थ की ही तो बंधक मात्र बनकर रह जाएंगी। जैसाकि वर्तमान में भी हम देख रहे हैं। विदेश प्रवर्तन–निदेशालय केवल विपक्षी दलों के नेताओं के घरों और कार्यालयों पर ही छापे क्यों डाल रहा है क्या सत्ताधारी दल के सभी नेता नितान्त परम पावन हैं और केवल विपक्षी दल ही परम पातकी या अधम और पतित है। जबकि सत्ताधारी दल ही वर्तमान में पतित पावनी गंगा बन गया है जो भी व्यक्ति उसमें स्नान कर लेता है, वही पाप–ताप से मुक्त क्यों हो जाता है। जब अपना पाँच वर्षों का कार्यकाल पूर्ण होने को

है, तभी आधुनिक आखण्डल या इन्द्र को लोकपाल की नियुक्ति का अलौकि बोध हुआ है। उससे पहले चाहे जो भी घपले–घोटाले होते रहे हों, आखिर उनके लिए जबावदेह कौन है। और तो क्या राफेल–घोटाले के लिए एक संसदीय जाँच समिति के गठन की विपक्ष की मांग को सिरे से सत्ताधीश ने नकार दिया है, तब कहाँ रही नैतिकता और लोकलाज जिससे कि लोकराज चला करता है।

अतएव देशभक्ति या राष्ट्रभक्ति ही राजभक्ति नहीं है। राष्ट्र एक शाश्वत और स्थायी संस्थान है; जबकि राज का संचालन करने वाले लोग बदलते ही रहते हैं। लेकिन यदि वे जनतांत्रिक नहीं होंगे तो संस्थाओं को भी स्वतंत्रापूर्वक कार्य भला वे क्यों करने देंगें। आजकल वही सब तो हो रहा है। अब सेना के शौर्य को भी अपना ही प्रचण्ड़ पराक्रम क्यों बखाना जा रहा है। वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को भी सत्ताधारी दल अपनी उपलब्धियाँ गिनाकर बोट बटोरना क्यों चाहता है। जबकि ये चीजें हमारे राष्ट्र की दशकों की दक्षता और परिश्रम का ही तो प्रतिफल हैं। अलगाववाद और उग्रवाद कश्मीर में चरम पर है, वहाँ पर जनतंत्र की इतिश्री हो रही है। क्या केवल सैन्यतंत्र के बल पर ही किसी प्रदेश पर शासन किया जा सकता है। क्या जनतंत्र में संवाद स्थापित नहीं हो सकता। सैनिकों के बलिदान और उनके शौर्य को भी जो सत्ताधीश अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि मानता हो, भला वह कितना अलोकतांत्रिक होगा। फिर भी उग्र राष्ट्रवाद अथवा हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम पर उसी के प्रति अंधभक्ति देशभक्ति भी कैसे ही कही जा सकती है। यह सब तो नागरिकों के स्वयं विवेक की बाती का बुझना ही कहा जा सकता है।

राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति के अन्तर को अलगाने के लिए हम भारतेन्दु हरिशचन्द्र गुप्त की ये पंक्तियाँ प्रस्तुत करना चाहेंगें –

"अंग्रेज राज सुख–साज सजे सब भारी,
पै धन विदेश चलि जात यही अति ख्वारी।"

इस काव्यांश की जो ऊपर वाली पंक्ति है, वह बिट्रिश साम्राज्य की विधि–व्यवस्था और कानून–कायदों को लेकर प्रशंसा से परिपूर्ण है; अतएव यह राजभक्ति का ही तो नमूना है। दूसरी जो पंक्ति है, वह राष्ट्रभक्ति पूर्ण है। क्योंकि उसमें अंग्रेजी साम्राज्य द्वारा जो आर्थिक शोषण और दमन–दोहन किया जा रहा था, उसी की ओर स्पष्ट संकेत है। अतएव यह देशभक्ति का ही तो उज्जवल उदाहरण है। इसलिए भारतेन्दु की इन पंक्तियों को एक ही साथ राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति का उत्तम उदाहरण माना जाता है। अतएव सरकार मात्र की प्रंशसा ही देशभक्ति या राष्ट्रभक्ति नहीं होती जैसाकि वर्तमान में हो रहा है।

यह मध्यकालीन मानसिकता है कि सरकार ही राष्ट्र है। अतएव उसका विरोध ही राष्ट्र के प्रति द्रोह का द्योतक है। क्योंकि वह सामन्ती अथवा साम्राज्यवादी शासन–प्रणाली से प्रेरित मानसिकता ही थी। जिसमें पुरोहित–पण्ड़ों ने राजा के जन्म और कर्म को दिव्य माना हुआ था। अतएव सामन्ती शासक भी स्वयं को दैवी अंशों से उद्भूत या फिर राम–कृष्ण के हो तो वंशज मानते हैं। यूरोप के पादरियों ने भी यही कह रखा था– "ज्ञपदह पे दमअमत तवदह" अर्थात् राजा कभी गल्ती कर ही नहीं सकता।" जबकि हमारी और आपकी भाँति वह भी एक साधारण मनुष्य ही तो होता है। इसलिए शासन–कार्य में उसकी सहायता के लिए एक मन्त्रीमंडल की आवश्यकता का अनुभव हुआ था। लेकिन एक सर्वसत्तासम्पन्न अधिनायक मन्त्रियों के साथ भी जब सन्त्रियों जैसा उपेक्षापूर्ण दुर्व्यवहार करता है तो वहाँ पर जनतंत्र की व्यवस्था की बस इतिश्री ही समझो।

यहाँ पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे धर्माचार्य की सत्यार्थ–प्रकाश में यही सम्मति है– "जिस प्रकार से जंगल में सिँह अति शक्ति–सम्पन्न होकर शेष जानवरों का अस्तित्व –क्षय कर देता है, इसी प्रकार से यदि राजकाज में किसी एक ही व्यक्ति को सर्वाधिकार मिल जाते हैं तो वह भी व्याघ्र के समान हिंसक और क्रूर बन जाता है।" अतएव जनतांत्रिक व्यवस्था में 'चैक एण्ड बैलेन्स' के माध्यम से शक्ति–सन्तुलन का ही कार्य किया गया है। तभी तो सरकार के विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसे विभाग हैं। उधर खबरपालिका या प्रैस भी उसका चौथा जनपक्षीय स्तम्भ है। अतः हम अन्त में अकबर इलाहाबादी के शब्दों में यही कहेंगें –

"खींचो न कमानो को न तलवार निकालो,
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।"

लेकिन आज तो हमारा मीडिया या जन संचार के माध्यम भी प्रधानमंत्री को ही अमेरिका के राष्ट्रपति की भाँति परोस रहे हैं। जबकि संसदीय शासन–प्रणाली में तो सांसदों का ही निर्वाचित किया जाता है।

आजकल केवल प्रधानमंत्री मोदी के नाम पर ही चुनाव क्यों लड़ा जा रहा है। क्या भारतवर्ष में भी अमेरिका की भाँति राष्ट्रपति की शासन–पद्धति है। जबकि बजाय संसद सदस्यों के चुनाव के अकेले प्रधानमंत्री के नाम का ही मन्त्र–जाप दिनरात किया जा रहा है। तभी तो एक व्यक्ति सर्वेसर्वा और सर्वशक्तिमान आज बन बैठा है। तब फिर उसके प्रति अंधभक्ति ही अंधराष्ट्रवाद क्यों नहीं माना जाएगा। उसके द्वारा विरोधियों को राष्ट्रद्रोही ठहराना और स्वयं को ही एकमात्र राष्ट्ररक्षक सिद्ध करना यह अधि नायकवादी कार्यनीति ही तो कहलायेगी।



ईश्वर के अस्तित्व के लिए बुद्धि से प्रमाण नहीं मिल सकता क्योंकि ईश्वर बुद्धि से परे है। –महात्मा गांधी

# किसान-क्रान्ति के जनकःलौह-पुरुष चौधरी चरणसिंह

- डा0 दुर्ग पाल सिंह सोलंकी

किसान–क्रान्ति के जनक एवं भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह उन महापुरुषों में हैं जिन्होंने भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। वे हिन्दुस्तान के प्रमुख तपे–तपाये लोकप्रिय राजनेता थे। देश के स्वाधीनता–संग्राम में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा हैं। वे अर्थशास्त्र के महान् विचारक व मौलिक चिन्तक थे। ग्राम्य, कृषि तथा सहकारिता के क्षेत्र में उन्होने तत्कालीन शक्तिशाली प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरु की अदूरदर्शी नीतियों का स्पष्ट विरोध किया। देश के सर्वोच्च पद आसीन होकर राष्ट्र–निर्माण के लिए अथक रचनात्मक प्रयत्न किए। चाहे सत्ता में हों या विरोधी दल में, देश का किसान–कामगार चौधरी चरण सिंह का नाम सुनकर उनकी सभाओं में खिंचा आता था। निहित स्वार्थों को चौधरी चरण सिंह एक सही चेतावनी थे। उनके विचारों में अपूर्व दृढ़ता थी और जो कहते थे, उसको व्यवहार में करके दिखाते थे।

महाकवि सूरदास जी ने एक भजन के जरिए ऐसी भविष्य वाणी कर डाली थी जो हूबहू चौधरी साहब के राज्याभिषेक से मेल खाती हैः

''अरे मन धीरज काय न धरै।
एक सहस नव सत के ऊपर एसौ जोग जुरै।
शुक्ला जया नाम संवत्सर छठ सोमवार परै।
हलधर पुत्र परमार घर अपने दिल्ली छत्र बरै।

अर्थात ''रै मन धैर्य क्यों नहीं रखता। संवत् 1990 के आगे शुक्ल और जया संवत्सर के बीच जब छठी तिथि को सोमवार पड़ेगा, उस दिन पमार वंश का किसान–पुत्र दिल्लीश्वर होगा।''

चौधरी चरण सिंह देश के किसान–कामगारों के मसीहा थे। पिछड़े–दलित–शोषित–अल्पसंख्यक तथा सर्वहारा के रहनुमा थे। उनमें देशभक्ति एवं लोक की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे भारत माता के ऐसे महान सपूत थे जिन्होंने राष्ट्र–हित में बड़े से बड़ा त्याग करने में जरा भी विलम्ब नहीं किया। इस्तीफा तो हर समय उनकी जेब में लिखा रखा रहता था। विशुद्ध गान्धीवादी, आदर्श प्रिय, यथार्थवादी तथा प्रखर व्यक्तित्व के धनी चौधरी चरण सिंह ने महात्मा गान्धी की नीतियों एवं कई कार्यक्रमों को मूर्तरुप देने का प्रयास किया। वे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न ऐसी जीवन्ता क्रान्तिदर्शी राजनीतिज्ञ थे जो अपनी दूरदर्शिता, दृढ़निश्चयता और ईमानदारी के लिए देश के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। सत्य भाषण और स्पष्टवादिता उनके चरित्र का बल है जिसके कारण उन्हें लौह–पुरुष कहना सर्वथा उचित है। उनसे मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी यह स्वीकार करता है कि वह एक निडर और ईमानदार लोक नेता थे। भ्रष्टाचार को प्रशासन और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से खत्म करना उनके जीवन का लक्ष्य था। सादा–जीवन उच्च–विचार, उज्ज्वल–चरित्र और देश–प्यार उनके चरित्र की विशेषतायें हैं। सामाजिक शोषण और उत्पीडन के वे कट्टर विरोधी है। उनकी आर्थिक नीतियों और मान्यताओं का मूल किसानों, कमजोर–वर्गों पिछड़े, और अनुसूचित जातियों का कल्याण व उनकी आर्थिक दशाओं को ऊँचा उठाना है जिससे भारत समुचे तौर पर राष्ट्र–प्रगति की दिशा प्राप्त कर सके। अतः वह कृषि–मूलक आर्थिक नीतियों के समर्थक हैं किन्तु औद्योगिक एवं सर्वतोमुखी विकास में भी उनका उतना ही विश्वास है।

हिन्दुस्तान की राजनीति में जो लोग नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे, उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम पहली पंक्ति में आता है। जहाँ मूल्यों और अनुशासन की बात आती थी, वे बज्र से कठोर थे वहीं मानवीय दुःख–दर्द के प्रति वह कुसुम से कोमल थे। गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी,रामकृष्ण परमहंस और महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा रहबरे आजम दीनबन्धु सर चौधरी छोटूराम और महान् क्रान्तिकारी एवं भारत की प्रथम अस्थायी स्वतन्त्र राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप के नैतिक मूल्यों की छाया में उनके असाधारण व्यक्तित्व का विकास हुआ था।

चौधरी चरणसिंह के विचारानुसार भारत की गरीबी का कारण गाँव और खेती की निरन्तर उपेक्षा है। उनके मत में देश की तरक्की का रास्ता खेतों की पगडन्डी, बागों और खलिहानों तथा गाँवों की गलियों से निकलता है, शहर के महलों से नहीं। जब तक गाँवों का विकास नहीं होगा, हिन्दुस्तान उन्नति के पथ पर नहीं बढ़ सकेगा। साहब ने कुटीर ओर ग्रामीण लघु–उद्योगों के विस्तार पर जोर देते हुए प्राकृतिक संसाधनों को स्वदेशी तकनीक से उपयोग के लिए आहान किया। वे मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे लेकिन उनकी मान्यता थी कि जो कार्य हाथें से हो, उसके लिए मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाये। इससे बेरोजगारों को काम मिलेगा।

चौधरी चरण सिंह के शब्दों में, ''भ्रष्टाचार आज अपनी चरम सीमा पर भयानक रुप भयानक रुप धारण कर चुका है। कोई ही जन–नेता होगा जो ईमानदारी से काम कर रहा होगा। सर्वत्र ऊपर से नीचे भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में पच्चीस ईमानदार लोग तैनात कर दिये जाये तो पाँच वर्ष में भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है।'' इन पंक्तियों के लेखक का चौधरी साहब से भारतीय क्रान्ति दल (बी0के0डी0) की स्थापना, इन्दौर (मध्य प्रदेश) के राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर, 1967 के समय से घनिष्ठ रुप से राजनैतिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सक्रियता से रहा है। यद्यपि वे छात्र जीवन से ही उनके सम्पर्क में आये थे। अपने एक पत्र में उन्होने लेखक को लिखा थाः–

''..... आज जो भी लोग राजनीति के क्षेत्र में आते हैं, वे विधायक बनना चाहते हैं और विधायक बनते ही उनके मन के अन्दर मन्त्री पद की लालसा पैदा हो जाती है। किसी के सामने कोई आदर्श नहीं है। सभी राजनैतिक पार्टियों का यही हाल है।'' कितना सटीक कथन है?

चौधरी चरणसिंह ने राजनीति और प्रशासन में पनपे जातिवाद के विरोध में पत्र लिखकर तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरु को सुझाव दिया था कि अन्तर्जातीय विवाह करने वाले को राजपत्रित पदों पर नियुक्त किया जाये लेकिन उनके विचारों को सही रुप में नहीं लिया गया। नेहरु जी चुप्पी साध गये।

चौधरी चरण सिंह आधुनिक भारत के निर्माता व जननायक थे। वर्तमान सरकारें यदि उनकी नीतियों का अनुसरण करें तो देश की तस्वीर बदल जायेगी। आज गरीबी की आवाज उठाने वाले अनेक नेता हैं, जो उनके नाम पर राजनीति कर रहे हैं लेकिन वे केवल भाषणों द्वारा ही जनता के प्रति कोरी हमदर्दी का प्रदर्शन करने के सिवाय व्यावहारिक पक्ष के लिहाज से शून्य हैं। चौधरी चरण सिंह के प्रति सरकार, राजनीतिज्ञों, विचारकों व समाज सेवी संस्थाओं आदि का उपेक्षापूर्ण रवैया और उदासीनता के कारण उनके जीवन–चरित्र एवं दर्शन का पूर्ण रुप से मूल्यांकन अभी तक सम्भव नहीं हुआ है। इस महान् विभूति का चरित्र बहुत उच्च स्तर का था। महान व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना असम्भव है। उसका तो केवल एहसास ही किया जा सकता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा कहते हैं कि ''चौधरी चरण सिंह जी की जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी, वह वह यह कि वे हमारे देश की जमीन से जुड़े हुए थे। उन्हें इस देश की अस्मिता की गहरी पहचान थी। भारतीय किसानों के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ भी किया, वह ऐतिहासिक महत्त्व का है। मैं उन्हें देश की जड़ों से जुड़ा नेता मानता हूँ। '' पुर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का कहना है कि ''चौधरी चरण सिंह जी का जीवन, उनका देशभक्ति का जज्बा, ईमानदारी एक मिसाल है। हमें उनकी खूबियों से प्रेरणा लेनी है। वह बहुत साफ दिल इन्सान थे। उनकी जिन्दगी हमारे लिए लिए उदाहरण है। हमें गर्व है कि ऐसे महापुरुष ने इस जमीन पर जन्म लिया। ऐसे महापुरुष के बताए रास्ते पर चलने का हम संकल्प लें।'' मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत के शब्दों में, ''चौधरी चरण सिंह ने भारत के कोमी मुक्ति–संघर्ष और किसानों को जागरुक करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चौधरी साहब का नाम उनके कार्यों के कारण अमर रहेगा और उनके विचार किसानों की हमेशा रहनुमाई करते रहेगे। ''पूर्व प्रधान मन्त्री राजा माँडा श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने लिखा हैं कि '' चौधरी चरण सिंह से सम्पर्क का मौका एक बार अमेरिका में उनकी बीमारी के दौरान मिला था जिसमें उन्होंने कहा था कि इस देश का क्या होगा? इसके बाद उनकी आँखों से आँसुओं की धारा फूट पड़ी। उनके इस एक ही वाक्य में पीढ़ी की पूरी वेदना, पूरा दर्द छिपा हुआ था। इसलिए मेरा कहना है कि देश, देश के गरीब, मेहनतकश, किसान–मजदूर के लिए जो टोस चौधरी साहब के मन में थी, यदि उसे हमने सही मायनों में नहीं पहचाना तो उनकी आशाऐं पूरी नहीं होंगी। मुझे आशा और विश्वास है कि उन्होंने जो रास्ता हमें दिखाया है उस पर चलकर हम उनके सपनों का एक नया भारत बनायेंगे।''

युवा तुर्क रहे एवं हिन्दुस्तान के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी का मानना है कि ''चौधरी चरण सिंह जी जब हम बात करते हैं तो हम उस मन्त्र को याद करते हैं जो गाँधी जी ने दिया था ओर जिसे चौधरी साहब ने अपने जीवन में उतारा था। भारत के विकास का पथ भारत के गाँवों, खेत और खलिहानों से होकर गुजरता है। जब चौधरी साहब किसान की बात करते थे, तो किसान एक प्रतीक था। वह प्रतीक था बेबसी का, शोषण का,वह प्रतीक था उस दमन का, जिस दमन के सहारे का समाज चल रहा है। एक नया समाज बनाने का सवाल नहीं है, एक नया जीवन–दर्शन नहीं है। एक नई जिन्दगी में मेहनत करने वाला अपनी मेहनत का प्रतिफल पायेगा।

जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी, समाज को बदलने के लिये संघर्ष किया, उन लोगों की कतार में चौधरी चरण सिंह जी थे। आशा है कि न केवल हम उनकी जिंदगी के सुनहरे हिस्सों को देखेगें, न केवल याद करेंगे कि वह प्रधानमन्त्री थे, वह कभी मुख्य मन्त्री और भारत के गृह और वित्त मन्त्री भी बने थे बल्कि यह याद करेगें कि यह वह व्यक्ति था जो एक गरीव, गाँव की गलियों से किसान की झोंपड़ी से निकल कर आजादी की लड़ाई के दौर से निरन्तर संघर्ष करता रहा। दुःख है कि चौधरी चरण सिंह अपनी जिन्दगी में अपने सपनों का भारत नहीं देख सके। हमें इस दिशा में कदम आगे बढ़ाने ने के लिए सक्रिय होना है, तभी नया हिन्दुस्तान बन सकेगा। भारत के उप प्रधानमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के शब्दों में,''चौधरी चरण सिंह जी की स्पष्टवादित, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है, वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्त्ता के लिए दीपस्तम्भ है। देश की राजनीति में, खास कर अर्थनीति को दिशा देने में चौधरी साहब का बड़ा योगदान है।'' ''चौधरी चरण सिंह से लम्बे समय तक जुड़े रहे पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री सत्यपाल मलिक के विचार में '' चौधरी चरण सिंह के 'हृदय' देश के पिछड़ों और किसानों का मसीहा है जो गाँव से दिल्ली आया है और आर्थिक नियोजन पर थीसिस दे रहा है। चरण सिंह नेहरु जी की कब्र या बुत पर पत्थर नहीं फेंक रहे हैं। उन्होंने नीतियों की ठोस सरजमीन पर खड़े होकर जिन्दा और ताकतवर नेहरु जी को उनकी गलती बताई थी, विरोध किया था। वक्त ने चरण सिंह को सही साबित कर दिया। ''चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी पूर्व विधायक व सांसद माता श्रीमती गायत्री देवी अपने पति के महान् व्यक्तित्व को बहुत पसन्द करती थीं। उन्ही के शब्दों में, ''चौधरी साहब की एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है, ये जो भी एक बार सही समझकर मन में ठान लेते हैं, उस पर अड़ जाते हैं लेकिन उससे हटते नही, चाहे लाख कोई इनसे कहे। यद्यपि लोग इसी कारण इन्हें जिद्दी भी कहते हैं, लेकिन मैं समझती हूँ जो सख्त नहीं होगा, वह अच्छा शासक नहीं हो सकता।'' भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा कि'' चौधरी चरण सिंह को हम ग्रामीण का प्रतिनिधि, प्रवक्ता, जीती–जागती तस्वीर कह सकते हैं। भाव में, भाषा में, वेशभूषा में, भोजन में –चौधरी साहब वास्तविक भारत की तस्वीर पेश करते हैं।'

प्रख्यात इतिहासविद् एवं अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज मधोक की चौधरी चरण सिंह के साथ मिलकर सन्1974 में भारतीय लोक दल की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। वे भारतीय लोक दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी थे। प्रोफेसर मधोक

के विचार में, ''चौधरी चरण सिंह हिन्दुस्तान के बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी राजनेता थे। उनका महान् व्यक्तित्व था। वे किसान–कामगारों के हित चिन्तक थे।

वास्तव में, चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे, एक आन्दोलन थे, अपितु एक ऐसा समर्पित जीवन थे, जिसके अन्दर गाँव और हिन्दुस्तान का दर्द छिपा हुआ था। वे आम आदमी की खुशहाली के समर्थक थे। वे प्रत्येक भारतीय के लिए भोजन,वस्त्र मकान के साथ –साथ स्वास्थ्य और शिक्षा की उचित व्यवस्था चाहते थे।

चौधरी चरण सिंह के प्रति सच्ची और हार्दिक श्रद्धाजलि तभी हो सकती है, जब एक सामान्य नागरिक से लेकर उच्च प्रशासनिक अधिकारी, राजनैतिक नेता एवं कार्यकर्त्ता, मिनिस्टर एवं अन्य कर्णधार भी देशभक्ति की भावना से भरे हों तथा राष्ट्र–निर्माण का दृढ़ संकल्प लेकर लोक–जीवन में उतरें।

चौधरी साहब आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। रास्ते पर चलना होगा, तभी हम उनके सपनों का नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेंगे। इस पावन पुनीत अवसर पर मैं चौधरी चरण सिंह जैसे महान व्यक्तित्व के चरणों में नतमस्तक होकर उन्हें सादर प्रमाण करता हूँ कि:–

''सत्य–सादगी और संयम था, मन में सदा सच्चाई थी।
चरणसिंह के चरित्र में, चिन्तन की गहराई थी।।
मन में और कर्म में उनके, सदा रहा था अजब निखार।
इस समाज की कुरीतियों पर, किया उन्होंने,सदा प्रहार।।
राजनीति में सदा उन्होंने, उज्ज्वल कर्म किये थे।
भेदभाव के बिना सदा वे, सबके लिये जिये थे।
चरणसिंह जी इस भारत के, कुशल–लोकप्रिय नेता थे।
स्वार्थ–लोभ की दुनिया से थे दूर, बड़े युग चेता थे।।
इस भारत की खुशहाली के लिए, शुभकामना करता हूँ।
इस पावन–पुनीत दिवस पर नमन उन्हें मैं करता हूँ।।''

# वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl 27/5' BA (Hons.) PG Diploma in Interior Designing. Avoid Gotras: Beniwal, Khatri, Sehrawat. Cont.: 9876060046*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02.93) 26/5'4" M.Sc Physics, B.Ed. Pstet clear BA (Hons.) PG Diploma in Interior Designing. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Sindhu. Cont.: 9463330394*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.04.91) 28/5'3" BPT, MPT CMT, Employed as consultant Physiotheraphy in private Hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont.: 9467680428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.05.90) 29/5'5" M.Sc Bio Informatics, BSc Biotechnology. Working in Research Company with package 3.7 lakh PA. Father ex-IAF. Now working in Haryana govt. Brother, Bhabi working in UK. Avoid Gotras: Katira, Khatkar, Boora. Cont.: 9988643695, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct.93) 25/5' B. Tech Electrical & Communications from GJU, Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Sheokand. Cont.: 9613166296, 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (DOB Jan. 95) 24/5'1" B. Com from Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Sheokand. Cont.: 9613166296*
- *SM4 Manglik Jat Girl 25.6/5'2" MA Sociology from P.U. Avoid Gotras: Sejwal, Kadian, Beniwal. Cont.: 6284292884*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.87) 32/5'2" BSc. MSc. Hons. in Physics, PhD in Physics. Working as Assistant Professor in Physics on regular basis in Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Kaliraman, Dahiya. Cont.: 9988336791*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 12.05.88) 30.10/5'2" B.Sc. (MLT), from Punjab Technical University Jallandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 29/5'2" MCA. Working in Mobile Programming Co. at Mohali. Avoid Gotras: Gulia, Malhan, Dalal. Cont.: 9780385939*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.89) 30/5'4" M.Sc Chemistry, Doing job in School. Avoid Gotras: Hooda, Lamba, Pawria. Cont.: 9416849287*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08.91) 28/5'3" Diploma, B.Tech in Electrical Communications from Rohtak. Avoid Gotras: Pawria, Ahlawat, Nandal. Cont.: 9811658557*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University, GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 89) 30/5'4" MCA from P. U. Chandigarh, Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 9988359360*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.10.92) 26/5'5" M.Sc. Physics from P. U. B.Ed. HTET, CTET cleared. Pursuing Ph.D from Mulana. Avoid Gotras: Gahlayan, Khatkar, Chhikara, Boora. Cont.: 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM, Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl 27/5'5" M.Com, MBA, Working in government bank as officer in Panipat. Family settled in Bhiwani. Avoid Gotras: Gawaria, Sangwan, Sunda. Cont.: 9646519210*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct. 86) 32/5'5" MSc (Geography), M.Phil, PhD (pursuing from Punjab University since March, 2015) NET, JRF qualified. Father retired Haryana government officer.*



जिसने अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उस पर काम और लोभ का विष नहीं चढ़ता। –रामकृष्ण परमहंस

*Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan. Cont.: 9646404899*

- *SM4 Jat Girl (DOB 08.09.91) 27/5'5" HRM from Chandigarh. Diploma in Interior decoration. Avoid Gotras: Malik, Pawar, Rathi. Cont.: 8146962977*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 29/5'3" Employed as staff nurse in Government hospital. Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.12.92) 25.11/5'3" B.A, Working as Teacher in private institute. Avoid Gotras: Punia, Saral, Ghanghas. Cont.: 9888685061*
- *SM4 Jat Boy (DOB 13.01.91) 28/5'9" MBA. Employed as P. O. in Bank of in Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758*
- *SM4 Manglik Jat Boy (DOB 24.09.90) 28/5'7" B. Tech in Mechanical Engineering from Mulana University (Ambala). Employed as Upper Division Clerk in Chandigarh Administration. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Kadian, Dalal. Cont.: 7973036732*
- *SM4 (Dr.) Jat Boy (DOB 02.09.85) 33/5'8" BDS Banglore, Father Retired Principal, Mother MA, BEd. Two sisters BDS/ MBBS. Brother one BDS. Six acre agriculture land. Own Plots, flats and clinic. Required BDS, BAMS, BHMS, Nurse. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Mor. Cont.: 9868092590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" BSc in H.M. Employed in railways. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont.: 9815304886*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.11.93) 26/5'8" MSc Physics. Employed as Central Excise Inspector. Preference government employee with height 5'4". Avoid Gotras: Chahal, Dangi, Bagri. Cont.: 9416561365*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.08.91) 28/5'6" B. Tech. Working in MNC I.T. Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ruhella, Ruhil. Cont.: 9467806085*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.08.93) 26/5'8" B.V. Sc. Employed in Government job on contract basis at Rohtak. Avoid Gotras: Gehlan, Khatkar, Malik, Boora. Cont.: 9467630182*
- *SM4 Jat Boy (DOB February, 89) 29/5'11" MBBS. M.O. in Haryana. Father retired from Haryana government. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India) Avoid Gotras: Sangwan, Datarwal, Legha. Cont.: 8058980773*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.09.86) 32/5'11" Employed as Major in Army. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat, Sangwan, Dhaka. Cont.: 9050422041*
- *SM4 Jat Boy (DOB 3.10.90) 28/6' B.Tech. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Dhankhar, Suhag, Sangwan. Cont.: 8219949508*
- *SM4 Jat Boy (DOB 26.05.92) 26/5'8" B.Tech Mechanical, Own factory at Panchkula (PCB Manufacturing). Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*

# हमें जिन पर गर्व है।

## Civil Services Exam, 2018 result declared

Congratulations to all the successful candidates, who gave proud moment to the society...
We wish your bright future in Civil Services...

**लठ गाड़ दिये**

Keep it up....

| Rank | Name |
|---|---|
| 14 | Ankita choudhary |
| 61 | Girdhar |
| 67 | Manisha rana |
| 73 | Dalip kumar |
| 82 | Aparajita Singh sinsinwar |
| 83 | Nidhi siwach |
| 98 | Khusboo lather |
| 146 | Vikas ahlawat |
| 159 | Ram Niwas Bugalia |
| 166 | Dipankar choudhary |
| 191 | Hanul choudhary |
| 192 | Suneel sheoran |
| 201 | Varun jat |
| 205 | Mainsh choudhary |
| 214 | Kapil choudhary |
| 236 | Pankaj lamba |
| 256 | Manjeet singh |
| 324 | Naveen kumar |
| 337 | Ravi kumar sihag |
| 374 | Tarun tomar |
| 378 | Lakshay choudhary |
| 382 | Yashraj nain |
| 396 | Rini choudhary |
| 431 | Anil jhajharia |
| 482 | Mayank choudhary |
| 486 | jagdish bangrava |
| 526 | Sanjay sahu |
| 545 | Ajay choudhary |
| 554 | Somanda sahu |
| 563 | Om Prakash jat |
| 575 | Devendra choudhary |
| 580 | Arshdeep panwar |
| 590 | Rajendra Dudi |
| 627 | Rakesh sahoo |
| 632 | Krishan poonia |
| 738 | Gunjan arya |
| 756 | Pankaj choudhary |

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला इनकी इस शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

# करोडों की लागत से बनेगा कटरा में माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिये रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम यात्री निवास

आपको यह जानककर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ तथा रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम सभा जम्मू द्वारा आप सभी के सहयोग से गांव नौमई-कटरा, जम्मू में रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम की यादगार में पांच मंजिले यात्री निवास का निर्माण कार्य शुरू किया गया है।

यह विशाल भवन 1,20,000 वर्गफूट में बनाया जाएगा, जिसमें फैमिली सुइट सहित 300 कमरे होगें। करोड़ों रूपये की लागत से बनने वाले इस भवन में 5 मंजिल होगी जिन्हे 5 चरणो में पूरा किया जाएगा और यात्रियों की सुविधा हेतू भवन में 5 लिफ्ट भी लगाई जायेगीं। यह भवन स्थल जम्मू से 35 किलोमीटर दूर मैन जम्मू-कटरा हाईवे तथा कटरा बस स्टैंड से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस भवन निर्माण के लिए 10 कनाल जमीन खरीद ली गई है, जिस पर जमीन समतल करने तथा अस्थाई स्टोर व सिक्योरिटी गार्ड रूम का निर्माण कार्य चल रहा है। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कान्फ्रैंस हाल, मैडीकल स्टोर, डिस्पैंसरी, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके बच्चों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के विश्राम के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

यात्री निवास का भूमि पूजन 24 अक्तुबर 2018 को किया गया। भवन की आधारशिला व रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम की प्रतिमा का अनावरण दिनांक 10 फरवरी 2019 को बंसत पंचमी अवसर पर चौधरी बीरेन्द्र सिंह, केंद्रीय इस्पात मंत्री, डॉ0 जितेन्द्र सिंह, केन्द्रिय राज्य मंत्री तथा जम्मू काश्मीर के महामहिम श्री सत्यपाल मलिक के कर कमलो द्वारा किया गया ।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में 3 दिन तक मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इस भव्य भवन के लिए निर्माण सामग्री का भी योगदान दिया जा सकता है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला


## सम्पादक मंडल

**सरंक्षक एवं सम्पादक** : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
**सह–सम्पादक** : डा॰ राजवन्तीमान
**साज सज्जा एवं आमुख** : श्री आर. के. मलिक
**प्रकाशन समिति** : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
**वितरक** : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

**जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़**
**फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

**RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।